

ओमशान्ति मीडिया

वर्ष - 28

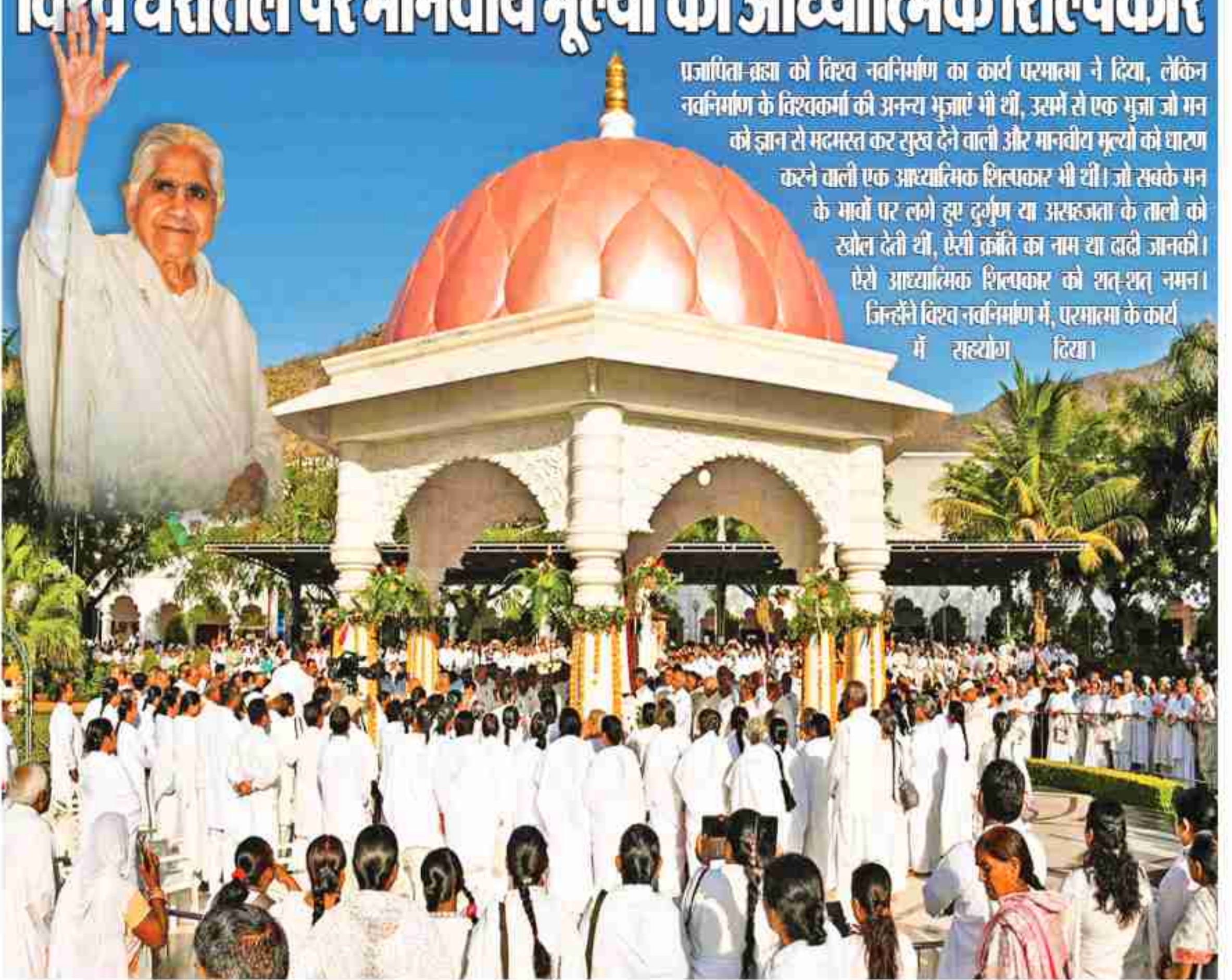
मई - 2026

अंक - 05

माउंट आबू

Rs. - 20

विश्व धरातल पर मानवीय मूल्यों की आध्यात्मिक शिल्पकार



प्रजापिता-ब्रह्मा को विश्व नवनिर्माण का कार्य परमात्मा ने दिया, लेकिन नवनिर्माण के विश्वकर्मा की अनन्य भुजाएं भी थीं, उसमें से एक भुजा जो मन को ज्ञान से मदमस्त कर सुख देने वाली और मानवीय मूल्यों को धारण करने वाली एक आध्यात्मिक शिल्पकार भी थी। जो सबके मन के भावों पर लगे हुए दुर्गुण या असहजता के तालों को खोल देती थी, ऐसी कर्माति का नाम था दादी जानकी। ऐसे आध्यात्मिक शिल्पकार को शत-शत नमन। जिन्होंने विश्व नवनिर्माण में, परमात्मा के कार्य में सहयोग दिया।

शान्तिवन-आबू लेड (तब्र.) ब्रह्माकुमारी संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी की छठवीं पुण्यतिथि भावपूर्ण मनाई गई। इस दौरान राजस्थान सरकार के स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खीवसर भी दादी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देते ब्रह्माकुमारी संस्थान के शान्तिवन पहुंचे। जहाँ उन्होंने दादी के समाधि स्थल शक्ति स्तम्भ पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि दादी जानकी ब्रह्माकुमारी संस्थान की आधार स्तम्भ रही। वे लगातार देश और दुनिया भर में मानवता का प्रचार-प्रसार करती रहीं। वे नारी शक्ति की प्रेरणा स्रोत थीं। ब्रह्माकुमारी संस्थान उनके निर्देशन में लेकर आज तक समाज को मन और तन से मजबूत करने का कार्य कर रहा है। दादी के स्मृति दिवस पर संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहनी दीदी ने कहा कि दादी के कदम पूरी दुनिया में ईश्वरीय पैगाम के लिए उठते रहे

है। उनकी खुद के लिए नहीं बल्कि समाज के लिए हमेशा ही सोच रही। जाति, धर्म, रंग, भाषा भेद की सारी दीवारें

दादी ने अंतिम सांस तक पूरी दुनिया का चक्कर लगाकर इतिहास रच दिया था। उनके कदमों में केवल लोक कल्याण की भावना थी। इस दौरान स्थानीय विधायक समाराम गरासिया, भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ. रक्षा भंडारी, पूर्व जिलाध्यक्ष सुरेश कोठारी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सतीष दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी



दादी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. मोहनी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. मुनी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, नेपाल सांघ अन्न खरीद करने।

तोड़ी। एक समाज, नयी दुनिया का निर्माण ही उनका लक्ष्य रहा। कार्यक्रम में अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुनी दीदी तथा राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि दादी में हमेशा मातृत्व का प्यार मिलता रहा। चाहे वे कुछ बोलें या ना बोलें परन्तु उनका वायब्रेशन बहुत सुकून देता था। इस अवसर पर संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि

ब्र.कु. मृत्युंजय, डॉ. प्रताप मिश्र, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल भी मौजूद रहे।

दादी

जानकी की छठवीं पुण्यतिथि के अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ भाई-बहनों ने स्मरण करते हुए कहा कि दादी सिर्फ ईश्वरीय सेवा में तपस नहीं रहती थी, बल्कि वे आंतरिक उन्नति कभी नहीं भूलती थी। इस वजह से वे सारे कारोबार संभालते हुए भी लाइट रहती थीं। उन्होंने कभी भी बाबा की मुल्लू मिस नहीं की। उनके दिल में हमेशा बाबा और बाबा की सेवा तथा ईश्वरीय परिवार रहा। गुरु ज्ञान किंदुओं को वह सहजता से स्पष्ट करती, जो दूसरों के दिल में समा जाते थे। दादी का जीवन एक खुली किताब की तरह था। कोई भी, कभी भी उससे सहजता से मिलता भी और समाधान भी पाता। दादी सत्यता, सादगी व बाबा में अटूट निश्चय की साक्षर मूर्ति थीं। उनका जीवन आज भी हम सभी ब्रह्मावत्स के लिए न सिर्फ प्रेरणादायी किन्तु अनुकरणीय भी है। आज भी दादी भले साक्षर रूप में हमारे बीच नहीं है फिर भी हर पल हमें अनुभव होता है कि वे हमारे साथ हैं। क्योंकि उनका जीवन ही हमें हरफल आत्म उन्नति के लिए प्रेरित करता है। उनकी पुण्यतिथि पर सर्व ब्रह्मावत्स भाई-बहनों



दादी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राजस्थान सरकार के स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खीवसर।

दिल की गहराइयों से भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

तथा सव में जो होता है, अच्छे के लिए होता है...!!



डॉ. क. क. मिश्रा

जीवन में अक्सर ऐसा समय आता है जब मनुष्य खुद को कठिन परिस्थितियों से घिरा हुआ पाता है। काम में असफलता, रिश्तों में तनाव और घर परिवार की समस्याएं व्यक्ति को भीतर से थका देती हैं। ऐसे समय में लोग अक्सर एक बात कहकर दिलासा देते हैं - "जो होता है, अच्छे के लिए होता है।" कई लोग इसे श्रीकृष्ण या गौतम बुद्ध की शिक्षा मान लेते हैं। लेकिन यदि हम गहराई से देखें तो इन महापुरुषों की शिक्षा इससे कहीं अधिक गहरी और जागरूक करने वाली है।

श्रीकृष्ण ने भगवद् गीता में कहा - "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" अर्थात् मनुष्य का अधिकार केवल कर्म करने पर है, फल पर नहीं। श्रीकृष्ण का यह संदेश हमें जीवन की एक महत्वपूर्ण सच्चाई से परिचित कराता है कि हमें अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए, न कि उसके परिणाम पर अत्यधिक चिंतित होना चाहिए। अक्सर मनुष्य हर काम इसलिए करता है कि उसे सफलता, सम्मान या सुख प्राप्त हो। इसी कारण उसका मन भविष्य की कल्पनाओं में उलझ जाता है। लेकिन वास्तविक जीवन तो केवल वर्तमान क्षण में ही जीया जा सकता है।

इसी प्रकार बुद्ध की शिक्षाएं भी जीवन को जागरूकता के साथ देखने की प्रेरणा देती हैं। बुद्ध ने सबसे पहले यह स्वीकार किया कि जीवन में दुःख है, लेकिन उन्होंने यह भी बताया कि यह दुःख स्थायी नहीं है। उन्होंने "अनित्य" का सिद्धान्त दिया, जिसका अर्थ है कि इस संसार में सब कुछ परिवर्तनशील है। सुख और दुःख दोनों ही समय के साथ बदलते रहते हैं। आज जो परिस्थिति हमें बहुत कठिन लगती है, वही भविष्य में साधारण लग सकती है।

जीवन में घटनाओं को समझने के लिए धैर्य और समय दोनों आवश्यक हैं। इस संदर्भ में एक प्रसिद्ध कहानी बताई जाती है। चीन के एक गाँव में एक बूढ़ा किसान रहता था। उसके पास एक घोड़ा था जो एक दिन भाग गया। गाँव वालों ने कहा कि यह बहुत बुरा हुआ, लेकिन किसान ने शांत भाव से कहा - "कौन जानता है, अच्छा या बुरा।" बाद में किसान का बेटा घोड़े से गिरकर घायल हो गया, जिसे लोग दुर्भाग्य मान रहे थे। लेकिन कुछ समय बाद युद्ध छिड़ गया और गाँव के सभी युवकों को सेना में ले जाया गया, जबकि किसान का बेटा घायल होने के कारण बच गया। यह कहानी हमें सिखाती है कि जीवन की किसी भी घटना का अंतिम अर्थ तुरंत समझ में नहीं आता। समय के साथ परिस्थितियों का अर्थ बदल सकता है। इसलिए हर घटना को तुरंत अच्छा या बुरा कह देना उचित नहीं है। जीवन को समझने का सही मार्ग यही है कि हम कर्म करते रहें और साथ ही जागरूक भी रहें। कृष्ण का संदेश हमें कर्म के प्रति समर्पित बनाता है और बुद्ध का मार्ग हमें सजगता की ओर ले जाता है। जब मनुष्य कर्म और जागरूकता दोनों को अपनाता है, तब वह जीवन की हर परिस्थिति में संतुलन और शांति का अनुभव कर सकता है। यही जीवन को समझने की सच्ची दृष्टि है।

हम सबकी साधना व योग क्या है? एक बाबा को अपना संसार बना लेना, उनके साथ अपने सर्व सम्बन्ध जोड़ना, यही हमारी सच्ची साधना है, क्योंकि जितना सम्बन्ध समीप का होता है उतना उसकी याद स्वतः रहती है। हमारा बाबा सर्व सम्बन्ध निभाने वाला है, बाबा से हमें अनेकानेक प्राप्तियां हुई हैं, उन सबका अनुभव है। तो साधना अर्थात् एक बाबा की याद और उस साधना में एकाग्रता।

भक्ति मार्ग में भक्त लोग भिन्न-भिन्न रूप से साधना करते हैं। जब तक वो अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते, दर्शन नहीं हो जाते तब तक एक टांग पर ही खड़े रहेंगे व हठयोग की साधना करते रहेंगे। यहाँ तो ऐसे हठयोग की, एक टांग पर खड़े होने की बात नहीं है, हम तो अपने मन-बुद्धि को एक में लगाते हैं- यही हमारी साधना है।

साधना शब्द का अर्थ है एकाग्रता, उसमें जरा भी हलचल न हो। जहाँ एकाग्रता होती है वहाँ जिस स्थिति का अनुभव करना चाहते हैं, वह चाहना एकाग्रता के बल से पूर्ण हो जाती है। जैसे परमपाम में हम मन-बुद्धि द्वारा एक संकल्प में पहुँच तो जाते हैं परन्तु उसमें सदैव एकाग्रता हो अर्थात् एकरस अवस्था हो और हमेशा उसी का अनुभव होता रहे। समझो, अभी आत्मा अशरीरी बनकर परमपाम में बाबा के साथ पहुँच गई, स्थिति वह हो गई फिर कोई भी व्यर्थ संकल्प या कोई काम का संकल्प भी न आये, कोई भी हलचल आकर्षित न करे, यही है सच्ची साधना। अगर एकाग्रता हिल जाती है तो वह साधना नहीं है। साधना का अर्थ ही है एक ही स्थिति में एकाग्र हो, जितना समय चाहे

उतना समय हम उस स्थिति में स्थित हो जाएं।

एक होता है पुरुषार्थ करना, जैसे हमने याद किया बाबा, मैं अशरीरी आत्मा हूँ। बाबा जैसे आप हो वैसे मैं भी आत्मा ज्योति हूँ, मैं भी परमपाम निवासी हूँ, अपने घर में बाबा आपसे मिलने आ रही हूँ संकल्प से ऐसा पुरुषार्थ करते हैं लेकिन जब साधना की स्थिति होती है तो उसमें पुरुषार्थ खत्म हो जाता है और उसी स्थिति में स्थित हो जाते हैं। हिलते-डुलते नहीं हैं और जितना समय हम चाहें उतना समय हम बाबा की याद में खो जाएं। ऐसी पाँवरफुल साधना हो जो हम अपने मन को एकाग्र करके उसमें टिक सके।

कभी-कभी हमारी रुचि होती है सूक्ष्मवतन में बड़ा बाबा, शिवबाबा से अत्यंत रूप में मुलाकात करे, तो वहाँ भी हलचल नहीं है, एकाग्रता है। एकाग्रता से मन को ऐसा स्थित करो जो मन हलचल में न आये। ऐसी साधना ही कर्मातीत अवस्था की निशानी है। जिस लक्ष्य से हम योग करने के लिए बैठें, उस समय सेवा का संकल्प भी न आये, ऐसी कन्ट्रोलिंग पाँवर हो। तो साधना का अर्थ है एकाग्रता से उस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहना।

साधना में कोई भी साधन अपनी ओर खींचे नहीं। साधन, साधना को हिलावे नहीं। साधन युज तो करना है लेकिन हमारा मन खींचे नहीं। जैसे कमल पुष्प कीचड़, पानी में रहता है लेकिन पानी की एक बुँद भी उसको स्पर्श नहीं करती है। ऐसे साधनों को युज करने के लिए कोई मना नहीं है लेकिन साधन हमारी स्थिति को नीचे-ऊपर न करे।

यह बेहद की यूनिवर्सिटी है, जिस यूनिवर्सिटी में पढ़ाने वाला प्रोफेसर, सुप्रीम टीचर परमात्मा है। भले ये प्यारे सुप्रीम फादर का घर भी है परन्तु साथ-साथ यूनिवर्सिटी भी है तो आप



डॉ. क. क. मिश्रा

दिव्य बुद्धि अर्थात् जो राइट और रॉन्ग की जजमेंट करे

सभी इस समय गॉडली स्ट्रेंट बन कर सुप्रीम टीचर द्वारा इस ज्ञानयोग की पढ़ाई पढ़ रहे हो। इस पढ़ाई से लाइफ के लिए सच्ची राह मिल जाती है, जिस राह से रुह को रहत मिलती है। ये नॉलेज हमें राइट और रॉन्ग की बुद्धि देती है। दिव्य बुद्धि अर्थात् जो राइट और रॉन्ग की जजमेंट करे। आज मनुष्य की बुद्धि राइट और रॉन्ग की ही जजमेंट करने में असमर्थ है। अपनी-अपनी मत से एक कहना ये राइट है, दूसरा कहना कि ये रॉन्ग है, राइट को रॉन्ग कर देते, रॉन्ग को राइट कर देते हैं। लेकिन ये नॉलेज जो वास्तविक सत्य है उसी सत्यता का फौरन जजमेंट देती है। कैसा भी कर्म करते हैं, कैसी भी चाल-चलन कोई चले, राइट-रॉन्ग की जजमेंट

मिलती है। जैसे हंस खीर और मीर दोनों को अलग कर लेता। रत्न चुग लेता है, कंकड़ छोड़ देता है। तो यह नॉलेज हमको हंस बनाती है। राइट रॉन्ग को यथार्थ पहचान देती है। दृष्टि, वृत्ति में स्वयं को और औरों को फील होता है कि ये जिस दृष्टि से देखता है वह रहानियत से देखता, प्रेम से देखता, सद्भावना से देखता या इसकी दृष्टि, वृत्ति कैसी है? यदि अपवित्रता की दृष्टि होगी तो भी अन्दर रियलाइज होगा। यदि किसी के लिए नफरत होगी तो भी उनकी दृष्टि से मालूम हो

है। यह सब नॉलेज से रियलाइज हो जाता है। यदि अन्दर से कुछ और भावना हो और बाहर से दिखावटी भावना हो - तो भी फील होगा। दिल से हम किसको कितना लव देते हैं या कॉमन रूप से लव रखते हैं- इन दोनों का अन्दर वह नॉलेज ही स्पष्ट करती है। इसीलिए ये नॉलेज हमको हरेक बात में निर्णय शक्ति देती है। तो आत्मिक स्मृति और परमात्म स्मृति का यही आधार है। क्योंकि बुद्धि के क्लियर होने से ही स्मृति पाँवरफुल होती जाती है - ये दो सम्बन्ध (ज्ञान और योग) जीवन के मूल आधार हैं। जितना-जितना इसकी गहराई में जाते हैं, स्टडी करते हैं, कॉन्शियस में रहते हैं उतना दैवी गुणों की धारणा होती है, सूक्ष्म संस्कार परिवर्तन होते हैं क्योंकि रियलाइजेशन की शक्ति आ जाती है। अतः सबसे पहले यह नॉलेज खुद को बहुत फायदा देती है।

आज प्रत्येक मनुष्य जीवन में अपनी-अपनी समस्याओं में उलझा रहता है। कभी तबियत ठीक नहीं होगी तो प्रॉब्लम, परिवार की समस्या आई तो प्रॉब्लम, आपसों कोई बात हुई तो भी प्रॉब्लम, जिसकी लाइफ में जितनी प्रॉब्लम आती, उतना वह मनुष्य मुँहासा रहता है। कद्यों को लाइफ ऐसा है - ठीक है चल रहे हैं, उदास है, मुँहे हुए हैं, उनको अपनी लाइफ की कैल्यू नहीं, लाइफ का कोई हल नहीं है, कोई ऊँचा आदर्श नहीं, कोई उम्मीद नहीं। लेकिन यह ज्ञान हमें जीवन को हर प्रॉब्लम का हल देता है। इसलिए आप लोग जितना-जितना इस ज्ञान-योग की स्टडी करते जायेंगे उतनी सफलता मिलती जायेगी। जैसे वैज्ञानिक खूब स्टडी करते, नई-नई खोजें करते, सफल होते जाते, अनेक साधन तैयार करते जाते, तो जितनी उसकी गहराई है उतनी इस साइलेंस की शक्ति व योग की शक्ति को भी गहराई है। वह बहुत बड़ी शक्ति है, इस शक्ति के आधार से हम अपनी जीवन को जैसा दिव्य बनाना चाहें वैसा बना सकते हैं।

फॉलोअर नहीं, हम बाबा को फॉलो करने वाले हैं

याद अच्छी तब रहेगी जब हर बात में बाबा को फॉलो करने की लगन होगी। भक्ति में तो सिर्फ फॉलोअर कहने मात्र होते हैं क्योंकि फॉलो कर्ही करते हैं। सिर्फ गुरु में भावना होती है, बस। अनेक गुरु करने के बजाए एक को गुरु मान करके उसी में भावना रखते हैं। लेकिन यहाँ हमारी एक बाबा में भावना भी है तो विश्वास भी है।

हम सबको पहले खुद में निश्चय हुआ, फिर बाप में, ड्रामा में, निश्चयबुद्धि बनें, इसी निश्चय से विजयी बने हैं। संगम पर हमारा हीरो-हीरोइन पार्ट है। सारे कल्प में हम ऊँचा फर्ट बजाने वाली आत्मा हैं, यह बुद्धि में न सिर्फ सम्झना है पर दिल से मान लिया है। तो उसका अन्दर से अनुभव होने लगता है, निश्चय ने अनुभव करा लिया है तो भावना बैठ गई है। निश्चय सम्झ से हुआ है इसलिए कोई संशय उठता ही नहीं है।

चेक करो खुद में, बाप में या ड्रामा में या कोई भी बात में कभी क्वेश्चन मार्क तो नहीं उठता कि यह क्यों, यह क्या... ज्ञाय, क्याट, केन... इन सबमें डब्ल्यू लिखना बड़ा डिफिकल्ट है। एक बाबा दूसरा विक्ट्री (विजयी) जो इन दो बातों को समझ जाता है वो होली और योगी बन जाता है।

हम सब आत्माएं भाई-भाई हैं और ब्राह्मण भाई-बहन हैं तो दुष्टि एकदम आत्मा की तरफ जाती है। परमात्मा मेरा बाप है, हम सब उसके ही बच्चे हैं। जब हमारी दुष्टि भाई-भाई की बन जाती है, तो अशरीरी स्थिति भी सहज बन जाती है। अगर आत्मा की दुष्टि से नहीं देखेंगे तो रुह में रुहानियत की खुशबू नहीं आ सकेगी।

बाबा हमें कर्म से जो गुण सिखाता है वह गुण औरों को भी बाबा की तरफ खींचते हैं। वच्चा है, बूढ़ा है सिर्फ मुसकुरा के कोई पानी का गिलास भी देवे तो कितना अच्छा लगेगा और बिना मुसकुराये कोई खाना भी देवे तो इतना अच्छा नहीं लगेगा। तो सदा यह नशा रहे कि हम किसके साथ रहते हैं? मेरे को कौन पढ़ाता है? बाबा तो बहुत अच्छा है, हमें बाबा अच्छा लगता है पर बाबा को अच्छा कौन लगेगा? जो अच्छा पड़ेगा।

सबसे अमृतवले बाप है, क्लास के समय टीचर है। सेवा के समय हमारा योग कैसा हो वह भी बाबा हमें बताता है। सुबह अमृतवले उठना कैसे, बैठना कैसे... वो भी सिखाता है। उस घड़ी कुछ नहीं कहता है, पर अपनी अकर्मण्य से खींचता है। टीचर खींचता नहीं है, बाबा खींचता है।

पढ़ाई में कितना बार मीठे बच्चे, मीठे बच्चे कह करके अन्दर से सारा कड़वापन निकाल देता है। ब्राह्मण कुल की शोभा बढ़ाने वाले स्वदर्शन चक्रधारी बच्चे बनते हैं। पढ़ाने वाला जैसे पढ़ा रहा है, वैसे ध्यान दे करके पढ़ना है। श्रीमत को अच्छी तरह से जानकर, मानकर उस पर चलना है। कभी मनमत नहीं चलानी है। इसमें अपना भाव-स्वभाव, संस्कार काम नहीं करे। तो बाबा देखकर खुश होगा कि यह बच्चा अच्छा पढ़ता है। अच्छा पढ़ने वाले बच्चे को बाप अपनी गोद में बिठाता है।

किसी में रुसने की आदत है तो यह सबसे बुरी आदत है। जो आपस में अपने बहन-भाई से रुसते या किसी से भी रुसते हैं तो वो एक दिन बाबा से भी रुसने लग पड़ते हैं क्योंकि आदत पड़ गई। कई हैं जो खुद जब बच्चे थे तो लड़ते थे, जब बच्चे पैदा किये तो भी लड़ रहे हैं। बाबा हमारी वह सब आदतें चेंज करता है। स्वदर्शनचक्र धुमाओ तो पहले को सब आदतें बदल जायेंगी और तुम बदलोगे तो चैरिटी बिगन्स एट होम, आपे ही घर वाले चेंज हो जाते हैं। कई बार घर वालों को चेंज करने में थोड़ा टाइम लगता है क्योंकि हिमाब-किताना होता है। कोई अच्छा मानेंगे, कोई बुरा मानेंगे पर बाहर वाले बदलाव देखकर जब अच्छा कहते हैं तब घर वाले पीछे जाते हैं, यह भी कद्यों का मिसाल है।



डॉ. क. क. मिश्रा

परमात्म ज्ञान के एकमात्र कलमकार



ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आध्यात्मिक इतिहास में कुछ ऐसी महान आत्माएं हुई हैं, जिन्होंने परमात्मा के दिव्य ज्ञान को गहराई से समझकर उसे अत्यंत सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली रूप में विश्व के सामने प्रस्तुत किया। ऐसी ही विलक्षण विभूति थे, राजयोगी ब्र.कु. जगदीश चंद्र हसीजा। वे केवल एक प्रखर वक्ता ही नहीं, बल्कि गहन चिंतक, कुशल लेखक और राजयोग के सच्चे साधक थे, जिन्होंने अपने जीवन को परमात्मा की सेवा और विश्व कल्याण के लिए पूर्णतः समर्पित कर दिया।

राजयोगी ब्र.कु. जगदीश चंद्र हसीजा



राजयोगी ब्र.कु. जगदीश चंद्र हसीजा का जीवन ज्ञान, योग और सेवा का अनुपम संगम था। वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्य प्रवक्ता के रूप में विश्वभर में प्रसिद्ध थे। उन्होंने परमात्मा शिव के उस दिव्य ज्ञान को, जो दादा लेखराज कृपलानी (प्रजापिता ब्रह्मा बाबा) के माध्यम से अवतरित हुआ, अत्यंत स्पष्टता और गहराई के साथ मानवता के सामने प्रस्तुत किया।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे ईश्वरीय ज्ञान को केवल शब्दों में नहीं, बल्कि उसके भाव, उद्देश्य और गूढ़ आशय सहित समझते थे। उनकी स्मरण शक्ति और सूक्ष्म बुद्धि इतनी प्रखर थी कि वे परमात्मा के महावाक्यों को बिना लिखे ही सटीक रूप में प्रस्तुत कर देते थे। उनकी वाणी में अनुभव की शक्ति और सत्य की गूंज होती थी, जो सीधे हृदय को स्पर्श करती थी।

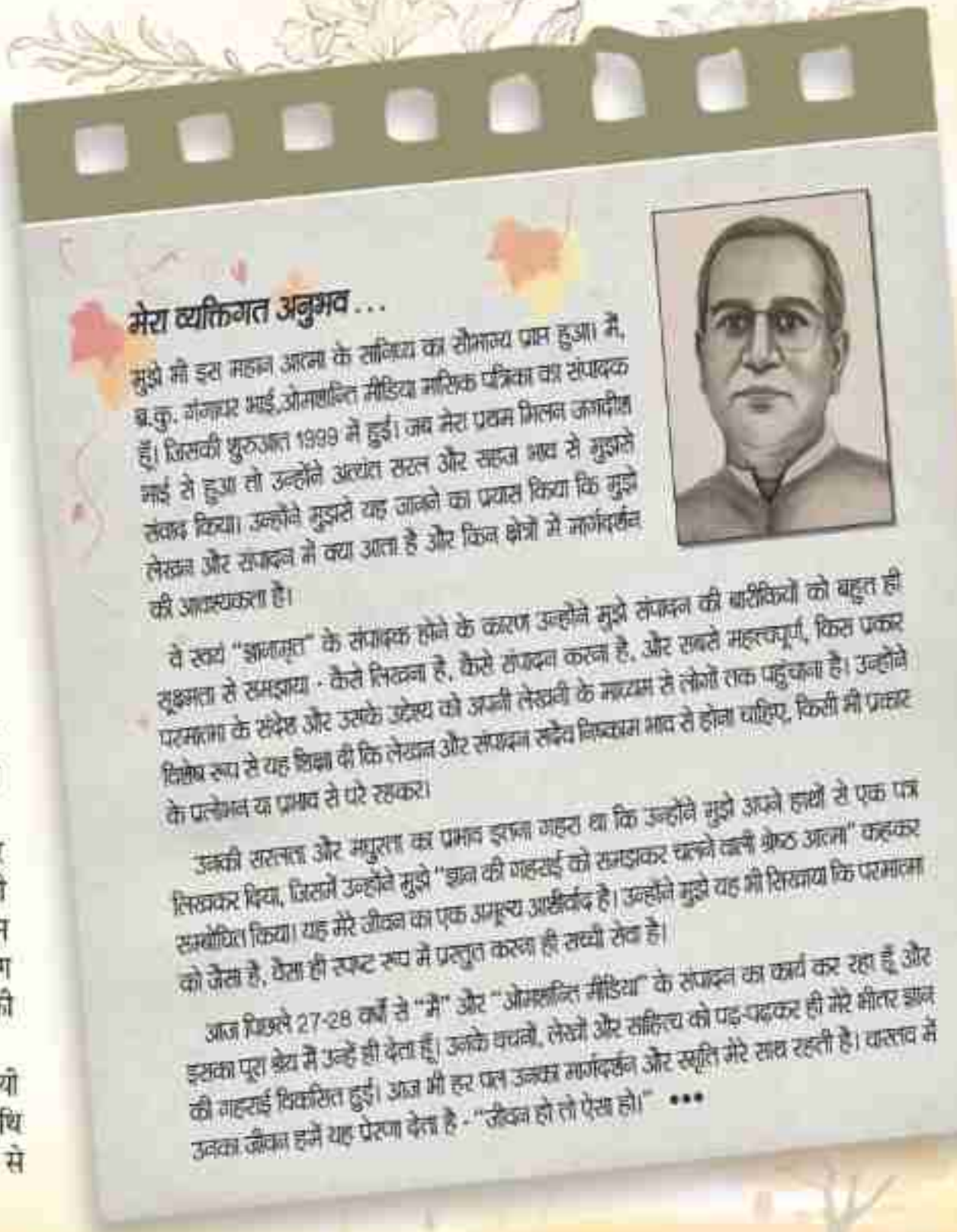
जगदीश भाई एक दूरदर्शी योजनाकार भी थे। उन्होंने समय के अनुसार समाज की आवश्यकता को समझते हुए सेवा के नए-नए आयाम स्थापित किए। उनके मार्गदर्शन में संस्था का कार्य पाँचों महाद्वीपों में फैलकर अनेक देशों तक पहुँचा और परमात्मा का संदेश विश्वव्यापी बन गया। वे न केवल ज्ञान के व्याख्याकार थे, बल्कि उस ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में उतारने की कला भी सिखाते थे।

उन्होंने वेदों, उपनिषदों और अनेक शास्त्रों का गहन अध्ययन किया था। इसलिए वे शास्त्रों में वर्णित आध्यात्मिक तथ्यों को वर्तमान ईश्वरीय ज्ञान से जोड़कर अत्यंत प्रमाणिक और तार्किक रूप में प्रस्तुत करते थे। उनका यह संदेश अत्यंत स्पष्ट था कि परमात्मा निराकार, ज्योति स्वरूप और एक है, और हम सभी आत्माएं उसकी संतान हैं।

उनकी वाणी में सरलता, मधुरता और स्पष्टता का अद्भुत संगम था। वे जटिल से जटिल विषयों को भी इतनी सहजता से समझाते थे कि हर व्यक्ति उसे अपने जीवन में अपना सके। उनका जीवन स्वयं इस बात का प्रमाण था कि सच्चा राजयोगी कहीं है, जो ज्ञान, योग और सेवा को अपने जीवन में पूर्णतः धारण करे।

आज उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर हम इस महान आत्मा को हृदय की गहराइयों से नमन करते हैं। उनका जीवन और उनकी शिक्षाएं सदैव हमें ज्ञान, योग और सेवा के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रहेंगी।

ऐसे महान योगी, तपस्वी व नयी दुनिया के नीति-निर्माता उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर दिल की गहराइयों से श्रद्धामुमन अर्पित करते हैं।



मेरा व्यक्तिगत अनुभव...

मुझे भी इस महान आत्मा के सौभाग्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं ब्र.कु. जगदीश भाई ओमशान्ति मीडिया मासिक पत्रिका का संपादक हूँ। जिसकी शुरुआत 1999 में हुई। जब मेरा प्रथम मिलन जगदीश भाई से हुआ तो उन्होंने अत्यंत सरल और सरल भाव से मुझे संबोधित किया। उन्होंने मुझसे यह जानने का प्रयास किया कि मुझे लेखन और संपादन में क्या आता है और किस क्षेत्र में जगदीश भाई की आवश्यकता है।

वे स्वयं "ज्ञानमृत" के संपादक होने के कारण उन्होंने मुझे संपादन की बारीकियों को बहुत ही सूक्ष्मता से समझाया - कैसे लिखना है, कैसे संपादन करना है, और सबसे महत्वपूर्ण, किस प्रकार परमात्मा के संदेश और उसके उद्देश्य को अजीब लेखकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाना है। उन्होंने विशेष रूप से यह शिक्षा दी कि लेखन और संपादन सदैव निष्पक्ष भाव से होना चाहिए, किसी भी प्रकार के प्रलोभन या प्रभाव से परे रहकर।

उनकी सरलता और मधुरता का प्रभाव इतना गहरा था कि उन्होंने मुझे अपने हाथों से एक पत्र लिखकर दिया, जिसमें उन्होंने मुझे "ज्ञान की गहराई को समझकर चलने वाली श्रेष्ठ आत्मा" कहकर सम्बोधित किया। यह मेरे जीवन का एक अनूठा आस्वाद है। उन्होंने मुझे यह भी सिखाया कि परमात्मा को कैसे है, ऐसा ही स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना ही सच्ची सेवा है।

आज पिछले 27-28 वर्षों से "मे" और "ओमशान्ति मीडिया" के संपादन का कार्य कर रहा हूँ और इसका पूरा श्रेय मैं उन्हें ही देता हूँ। उनके वचनों, लेखों और साहित्य को पढ़-पढ़कर ही मेरे भीतर ज्ञान की गहराई विकसित हुई। आज भी हर पल उनका मार्गदर्शन और स्मृति मेरे साथ रहती है। वास्तव में उनका जीवन हमें यह प्रेरणा देता है - "जीवन हो तो ऐसा हो" ...



इंदौर-अभितेज नगर (म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के 'शिव समर्पण भवन' के भूमि पावन समारोह में उपस्थित रहे माउंट आबू से मीडिया प्राण के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं ज्ञानमृत पत्रिका के प्रधान संपादक राजयोगी ब्र.कु. आत्म प्रकाश, ब्र.कु. चेतन, ब्र.कु. मनोज, इंदौर जोन की क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, शक्ति निवेदन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. करुणा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. श्रुति, ब्र.कु. महिमा, ब्र.कु. जयंती, कलानी नगर, ब्र.कु. उमा, रावपुर, डिप्टी कलेक्टर राधा महंत, डॉ. शिल्पा देसाई, एडवोकेट पूनम चंद्र मालवीय, सरपंच संघ के प्रभारों राजेश चतुर्वेदी, ब्र.कु. अरुण, यूएसए एवं अन्य।



अटपुलचूर-बदोदर (गुज.)। एक दिवसीय कैसर गिदान सौभाग्य का दीप प्रज्वलन कर शुभासुभ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. अरुण, प्राकृतिक भोजन व चिकित्सा विशेष एवं नवीन भोजन प्रणाली (एनईएस) के प्रणेता डॉ. बी.वी. चौहान, साथ उनकी धर्मपत्नी सरोजबेन चौहान, गुजरात योग बोर्ड के जिला कोऑर्डिनेटर सुनील पटेल, पूर्व रेट्रोडिंग कमेटी प्रेसिडेंट डॉ. कितिर पटेल, पूर्व डीन बड़ौदा मेडिकल कॉलेज डॉ. हॉटचंदनी, गचची सचिवालय खटंचा से गिरिश पटेल, पतंजलि मुंबई से सत्यम नृकवणी तथा अन्य।



तिरुवा-छ.ग.। प्रसिद्ध रामकथा वाक्ता सुत्री चन्द्रकला, अयोध्या से ज्ञान संचार करने के पश्चात् ईश्वरीय सीमांत भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रियंका।



राेगांव-महा.। ग्रामपंचायत राेगांव में उत्कर्षित शिवजी महाराज जयंती निमित्त कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अनंता कानन। मौके पर उपस्थित रहे पंचायत समिति राेगांव से प्रशासकीय अधिकारी संजय सुरेश्वर, मोहम्मद सलीम खान गट शिक्षण अधिकारी, कानक के रूप में शिक्षाजी महाराज तथा अन्य अधिकारियों।



इंदौर-राजेन्द्र नगर (म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रश्मा, ब्र.कु. अर्चना तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।



राेगांव-म.प्र.। रंग पंचमी पर्व पर आयोजित मोह मिलन कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे नैशवंत महारानी सख माया सक्ती, नंदन जी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नंदा तथा अन्य।

आत्मिक जागृति से सम्पूर्णता की ओर

जैसा आपका नाम है, वैसा ही आपका व्यक्तित्व भी है - आप ज्ञान की सच्ची गीता का साक्षात् स्वरूप हैं। अपनी तेजस्वी और ओजस्वी वाणी के माध्यम से आपने अनेक आत्माओं के जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन लाने का महान कार्य किया है।

आपको यह ईश्वरीय ज्ञान वर्ष 1969 में मात्र चौदह वर्ष की अल्पायु में गुजरात के सुरत से प्राप्त हुआ। लौकिक पढ़ाई में भी आप अत्यंत मेधावी छात्रा रहीं और आपने गुजरात मैट्रिक बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। परंतु इस अलौकिक ईश्वरीय ज्ञान ने आपको इतना प्रभावित किया कि आपने 1972 में अपना सम्पूर्ण जीवन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की समर्पित कर दिया।

प्रारंभिक समय में आपने गुजरात के अनेक स्थानों पर अपनी सेवाएं प्रदान कीं। लगातार 14 वर्षों तक भावनगर में सबजॉन इंचारज के रूप में आपने अत्यंत निष्ठा और समर्पण के साथ सेवाएं दीं। भारत के विभिन्न स्थानों पर आयोजित मेलों और आध्यात्मिक कार्यक्रमों में भी आपका विशेष सहयोग रहा।

1985 में जब संयुक्त राष्ट्र संगठन (यूएनओ) द्वारा "युवा वर्ष" मनाया गया, उस समय ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से 13 स्थानों से पदयात्राएं निकाली गईं। उनमें सोमनाथ से दिल्ली तक की पदयात्रा का मुख्य संचालन आपने किया।

इसके पश्चात् 1993 से अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय मधुवन के ज्ञानसरोवर में "अक्वामो फॉर ए बेटर वर्ल्ड" के विभिन्न विभागों में लगभग 17 वर्षों तक आपने अपनी विशेष सेवाएं प्रदान कीं। मधुवन में कुमारीयों, टीचर्स ट्रेनिंग तथा भक्ति के क्षेत्र में भी आप एक प्रभावशाली शिक्षिका के रूप में जानी जाती हैं और अपने गहन ज्ञान से आपने अनेकों आत्माओं को लाभान्वित किया है। साथ ही राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फंडेशन के अंतर्गत बिजनेस एंड इंडस्ट्री विंग के मधुवन कोऑर्डिनेटर के रूप में भी आप अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दे रही हैं।



हम सबकी अति प्रिय व परमात्मा
प्यारी राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी को

भावपूर्ण
श्रद्धांजलि

आपकी क्लासेज अत्यंत प्रभावशाली और स्पष्ट होती हैं। आपकी वाणी सीधे हृदय को स्पर्श करती है और हम आत्माओं को आत्मपरिवर्तन की प्रेरणा देती है। आपके लिए यही कहना उचित होगा कि तपस्या की सुमध से महका हुआ आपका व्यक्तित्व है और ज्ञान तथा योग से सजा हुआ आपका दिव्य जीवन है।



आध्यात्मिक जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल ज्ञान सुनना या धार्मिक कर्म करना नहीं है, बल्कि अपने जीवन को इतना पवित्र और श्रेष्ठ बनाना है कि हम परमपिता परमात्मा के समान गुणों को धारण कर सकें। हम सभी का लक्ष्य केवल आध्यात्मिक मार्ग पर चलना नहीं, बल्कि बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनना है। हम सभी ज्ञान सुनते हैं,

यही माया का प्रभाव है। वास्तव में हम आत्मा हैं और आत्मा का धर्म शांति, प्रेम, पवित्रता और आनंद है। लेकिन देह अभिमान के कारण मनुष्य इन दिव्य गुणों को भूल जाता है और विकारों के प्रभाव में आ जाता है।

आज के समय में समाज में जो अनेक समस्याएं दिखाई देती हैं - जैसे अपराध, हिंसा, अपहरण और अन्य सामाजिक बुराईयाँ - उनका मूल कारण मनुष्य के अंदर के विकार हैं। काम, क्रोध, लोभ और अहंकार मनुष्य के चार बड़े शत्रु

वह सच्चे सुख और संतोष से दूर हो जाता है। यह संगमयुग भाग्य बनाने का सर्वोत्तम समय है। इस समय जो आत्माएं सेवा, त्याग और निःस्वार्थ भाव से अपने समय, शक्ति और संसाधनों का उपयोग करती हैं, वे अपने लिए महान भाग्य का निर्माण करती हैं।

राजयोग का अभ्यास मनुष्य को आंतरिक शक्ति प्रदान करता है। जब आत्मा परमात्मा से जुड़ती है, तब उसके अंदर पवित्रता, शांति और प्रेम के गुण जागृत होने लगते हैं। धीरे-धीरे मनुष्य विकारों



योग का अभ्यास करते हैं और सेवा के कार्यों में भी भाग लेते हैं। इन सबके माध्यम से हमारे जीवन में उत्साह और आध्यात्मिक जागृति आती है। लेकिन दीदी जी समझाती हैं कि इन सभी साधनों का अंतिम उद्देश्य अपने जीवन में ऐसा परिवर्तन लाना है जिससे हम आत्मिक गुणों से भरपूर बन सकें। जब तक हमारे अंदर माया और विकारों का प्रभाव है, तब तक सम्पूर्णता की अवस्था को प्राप्त करना कठिन होता है।

मनुष्य को सबसे पहले माया को पहचानना आवश्यक है। माया वह शक्ति है जो आत्मा को उसके वास्तविक स्वरूप से भटका देती है। जब मनुष्य स्वयं को आत्मा के स्थान पर शरीर समझने लगता है और देह तथा देह के संबंधों में अत्यधिक आसक्त हो जाता है, तो

हैं। ये विकार मनुष्य के स्वभाव को अशांत और असंतुलित बना देते हैं, जिससे व्यक्ति स्वयं भी दुखी रहता है और दूसरों को भी दुःख देता है।

विशेष रूप से क्रोध मनुष्य के संबंधों को बहुत अधिक प्रभावित करता है। क्रोध के कारण मनुष्य के मन में द्वेष, नफरत और तिरस्कार की भावना उत्पन्न हो जाती है। जब व्यक्ति क्रोध के प्रभाव में होता है, तो वह दूसरों के प्रति सहनशीलता और प्रेम को भूल जाता है। इसलिए आध्यात्मिक जीवन में क्रोध समाप्त करना अत्यंत आवश्यक है। उसके स्थान पर हमें शांति, धैर्य और सहनशीलता को अपनाना चाहिए।

इसी प्रकार लोभ और लालच भी मनुष्य को गिरा देते हैं। जब मनुष्य धन और सम्पत्ति के प्रति अत्यधिक आसक्त हो जाता है, तो

पर विनय प्राप्त कर लेता है और उसका जीवन एक श्रेष्ठ उदाहरण बन जाता है।

अंततः हमें अपने जीवन में निरंतर आत्मचिंतन करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि कहीं माया या विकार हमारे जीवन को प्रभावित तो नहीं कर रहे। ज्ञान, योग और सेवा के मार्ग पर स्थिर रहकर हम अपने जीवन को इतना पवित्र बना सकते हैं कि हम वास्तव में बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बन सकें।

जब मनुष्य इस अवस्था को प्राप्त कर लेता है, तब उसका जीवन केवल स्वयं के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। यही ब्रह्मकुमारियों के राजयोग का सच्चा उद्देश्य है - आत्मा का उत्थान और विश्व का कल्याण।



इंदौर-प्रेम नगर (म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'वंदे मातरम्-स्वर्णम भारत की नीव सशक्त महिला' कार्यक्रम में कुमारी फल्लो कारण्ड, चार्टर्ड अकादमी, डॉ. आराधना मल्लुजा, एम्बोबोस, एम्बरडी, एमडी, डीएनबी, डॉ. होना सोनी, नेमा, विद्या भारती मध्य क्षेत्र की क्षेत्रीय सहमंत्री एवं मालवा प्रांत तपायिका, श्रीमती चंदनी नरेश कुंदवानी, महामंत्री भारलेख सिन्धु साभा, ज्येष्ठ महिला साखा, डॉ. रखी विष्णुनाथ, स्त्री एवं प्रभृति ऐग विशेषज्ञ, निकित मूलवंदानी, ऑफिसियल, बीसीएम ग्रुप, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. शशि शेट्टी, ब.कु. यश्वती बिजलपुर, ब.कु. शारदा बैराठी कॉलोनी, ब.कु. दामिनी सुदाना नगर एवं ब.कु. रश्मा सवेर नगर आदि को उपस्थित रही।



सिवनी-लखनवौन (म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. नगर पालिका अलयाशा मोना गोल्लानी, एडवोकेट ममता शर्मा, समाजसेविका अर्चना तिवारी, पार्षद यंजु साहू, साहू समाज की अध्यक्ष अर्चनाशा मोल्लानी, महिला मोर्चा महामंत्री माधुवी शर्मा, निरुद्ध केलोफेर सोमाश्री से रजनी अश्याल, महिला विंग की कोनल कोऑर्डिनेटर ब.कु. ज्योति एवं ब.कु. रंजिता।



वेवला-महारा.। पोलैड से अग्रे 50 विदेशी अतिथियों को ईश्वरीय संदेश व माउंट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् समूह चित्र में साथ ही स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. नीता तथा अन्य।



रत्नलाम-गौरव पैलेस कॉलोनी (म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में राधा महत, डिप्टी कलेक्टर, कुमुम चहर, महिला कार्यालय मासचिव, अनीता कटरिया, भारतीय जनता पार्टी जिला उपाध्यक्ष, सीमा अग्निहोत्री, प्रभवक अनांदम विभाग, डॉ. डोली मेहर, स्त्री ऐग विशेषज्ञ, डॉ. गीता दुबे, ट्रेडि प्लैटिनाम क्लब महिला अलयाशा, सुनीता पटवर्धन, लयस क्लब 'अभिमा' अध्यक्ष, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. मनोरमा, सह संचालिका ब.कु. पूजा, ब.कु. अरती, ब.कु. मंजुला, ब.कु. सीमा, नगर बाग, ब.कु. धारती, नामनी, ब.कु. नीलम, बड़ानगर तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।



दुर्ग-केसवबाड़ी (छ.ग.)। राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'आनंद सरोवर' में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में धरती साहू, डायरेक्टर, अर्धव कॉलेज धनेरा, मोहा मितल, सचिव इतर कॉलेज क्लब, पिकी बंसल, नीतु श्रोवामास, श्रुति फाउंडेशन, रोहिणी पाटणकर, रला नारमदेव, समाजसेवी व पूर्व एलटीएम नगर निगम, प्रांति बेदग, सदास अंतर्राष्ट्रीय परिवार समिति सेना सराफा क्लब, मिर्जापुर, सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. रीटा, ब.कु. चैतन्य प्रभा एवं अन्य गणमान्य महिलाएं।



विदिशा-म.प्र.। रविंद्र नाथ टैगोर संस्कृति भवन में विदिशा पुरातत्व विभाग एवं विदिशा विद्वत् कौलेज के द्वारा 'दौदगा विदिशा मेराभन' में उपस्थित रहे बालाजीपुरम सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. सपना, विदिशा कलेक्टर अंशुल गुवा, विद्याधर मुकेश टंडन, जिला पंचायत अध्यक्ष गीता रघुवंशी, जिला पुलिस अधीक्षक राहुत केशवानी, नगर पालिका अध्यक्ष रंजित शर्मा, जिला पंचायत सीईओ अरोपी सनीदिया, समाजिक न्याय विभाग के उपसंचालक अवध बिहारी खुरी।

ज़रूरी है सोने से पहले मन को शांत करना...

डॉ. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

आजकल कई लोगों को रात को नींद नहीं आती है। क्योंकि मन इतनी गति से चल रहा होता है कि जब लेट भी जाते हैं तब भी वो चलता जाता है। नींद नहीं आ रही है तो हम फोन उठाकर देखना शुरू कर देते हैं। लेकिन फोन देखने से मन की गति बढ़ेगी या कम होगी?

जब आपको गाड़ी पार्क करनी होती है तब आप उसकी स्पीड को बढ़ाते हैं या कम करते हैं? उसी प्रकार सोने से पहले मन की गति को कम करना है या बढ़ाना है? मोबाइल ने हमारे जीवन को आसान कर दिया है। लेकिन साधन को मालिक बनके उपयोग करना है, साधनों का गुलाम नहीं बन जाना है। साधन के पीछे अपने जीवन की साधना को छोड़ नहीं देना है। नहीं तो वो साधन हमारे जीवन में तनाव का कारण बन जाता है। किस-किस को लगता है फोन हमारे तनाव का कारण बन गया है? पर वो तो हमारे सारे काम इतने आसान करता है। फोन तनाव का कारण नहीं है, हम उसको किस तरह उपयोग करते हैं, वो तनाव का कारण है।

हमारे पास कुछ लोग मेडिटेशन सेंटर पर आते हैं तो कहते हैं दीदीजी हमको नींद नहीं आती है। तो दीदी कहती है कोई बात नहीं आकर आप मेडिटेशन करो। पर जैसे ही मेडिटेशन करने बैठते हैं तो नींद आने लगती



है। फिर 10 मिनट के बाद जब मेडिटेशन पूरा होता है तो कहते हैं दीदी बहुत अच्छा अनुभव हुआ। तो दीदी कहती है वो तो कल सोखेंगे, आपकी नींद अच्छी होगी 10 मिनट आज।

क्योंकि मेडिटेशन और नींद दोनों संकल्पों की गति को धीमा करते हैं। फोन संकल्पों की गति को बढ़ा देता है। तो फोन का उपयोग करना, लेकिन रात को सोने से पहले एक घंटा और सुबह उठते ही एक घंटा ये दो समय फोन के साथ नहीं है आप। हम मोबाइल स्क्रीन को स्कॉल करते हैं और सोचते हैं पाँच मिनट देखेंगे फिर सो जाएंगे, लेकिन वो वीडियो बने हुए हैं उस तरह से कि आप उन्हें

एक के बाद एक देखते जाते हैं। बाद है ना कैसे चिप्स का पैकेट पड़ा होता है तो हम खाते जाते हैं, मूंगफली पड़ी है खाते जाते हैं। फिर किसी को कहते हैं इसको हटाओ, नहीं तो मैं तो खाता ही जाऊंगा इसको। फोन भी वैसी ही चीज है।

रात को सोने से पहले मन की गति को धीमा करना है। दो चीजें आज से करें। एक तो रात्रि का भोजन जल्दी खाएं। वास्तव में उसको रात नहीं शाम का भोजन बोलना चाहिए। क्योंकि वो शाम को खाना चाहिए। शाम को अगर हम भोजन करेंगे तो वो 2-3 घंटे में पच जाएगा। फिर हमें 8 घंटा सोना नहीं पड़ता है। 6 घंटे सोये तो बहुत है। जल्दी खाना खाकर डाइजेशन कर लेंगे तो रोज के दो घंटे बच जाते हैं।

दूसरा- सोने का समय क्या होना चाहिए? 9:30 से शुरुआत करेंगे, तब जाकर 10 बजे सोयेंगे। अगर आप भोजन जल्दी कर लेते हैं, सोने से पहले फोन को लेकर अपने मन की स्पीड को बढ़ाते नहीं हैं और 10 बजे सो जाते हैं तो 10 बजे से 2 बजे के बीच शरीर के एक-एक अंग की हीरिंग होने लग जाती है। अगर आप उस तरह से सो गए तो 3:30-4:00 बजे आपको अलार्म लगाना नहीं पड़ेगा। आपकी नींद अपने आप खुल जाएगी।



रायगणपुर-ओड़िशा। फलमहीम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी के गृह नगर में शिकव-जापेशन करने के पश्चात् परमात्म स्मृति में पुर्न जी, ब.कु. सुप्रिया, ब.कु. सुदि तथा अन्य।



इंदौर-रानी वाम (म.प्र.)। महाशिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में के.क. कर्टिंग करते हुए इंदौर जैन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब.कु. देमलता दीदी, सोपबन्दी अनुसंधान केन्द्र के डायरेक्टर डॉ. जंवर हरीश प्रताप सिंह, महारानी भगवती कुमारी, द्वावुआ, कमल वर्मा, ब.कु. उषा, ब.कु. भुनेश्वरी तथा अन्य।



खिदिशा-म.प्र.। स्थानीय युवा मंच के तत्त्वस्थान में नशा मुक्ति पर संघेटी कार्यक्रम के पश्चात् प्रियंक कानूनगो, सदस्य मानव अधिकार आयोग भारत सरकार को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए आमंत्रित ब.कु. सफला। मौके पर उपस्थित रहे पुलिस अधीक्षक रॉहित कशवानी, सामाजिक न्याय विभाग के उपसंचालक अर्ध विहारी खरे, समाजसेवी तथा अन्य।



अलीराजपुर-म.प्र.। 'बंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' थीम पर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए धार्मिक प्रभाग के प्रभायी राजयोगी ब.कु. नारायण, इंदौर, सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. भापुरी, सौंडवा महाविद्यालय प्रोफेसर डॉ. एमि भन्वर, विधि महाविद्यालय प्रोफेसर संगीता खटौरी, वरिष्ठ समाज सेविका शशि कला, नगर की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुरभि जैन, खटौरी समाज की अध्याक्षा कीर्ति खटौरी, ब.कु. ज्योति तथा अन्य।



सटाणा-महारा.। इंटरनेशनल कुम्बेस डे के अवसर पर के.ए.ए.एन.एम. सोनवणे अटर्न्स, सार्दस एंड कौमर्स महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. अंजुलता बहन, ब.कु. सोनू बहन, कॉलेज की उप प्राचार्य शेवाड मैडम, कार्यक्रम संचालक अमित सर तथा अन्य कॉलेज स्टाफ।



रीवा-झिरीच(म.प्र.)। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय तथा ब्रह्माकुमारी संस्थान के समाज सेवा प्रभाग के साथ हुए एम.ओ.यू. समझौता शासन के तहत पितृमह सदन वृद्धा अश्रम महाराज गुरुजी सिंह सम्भार रिक्त कुटुंब अश्रम में वृद्धजनों के लिए आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान डॉ. प्रभाकर चतुर्वेदी अध्यक्ष भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी, डॉ. के.वी. गौतम मुख्य रिश्ता एवं स्वास्थ्य अधिकारी, सामाजिक न्याय विभाग के संचालक डॉ.के.वर्मा, उच्च शिक्षा विभाग के सेवानिवृत्त संचालक डॉ. पंकज श्रीवास्तव, हिंदू धर्म परिषद के संस्थापक नारायण द्विपावानी, खर्जी एके खान उपाध्यक्ष रेड क्रॉस सोसाइटी, प्रोफेसर आर्द्धवीवी फतेल पूर्व प्राचार्य टी.आर.एस. कॉलेज, वरिष्ठ भाजपा नेता प्रता त्रिपाठी, वरिष्ठ तिकित्सक डॉ. एच.पी. पांडेय, कार्यक्रम संयोजक एवं वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक ब.कु. प्रकाशचंद्र द्विवेदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब.कु. लता, ब.कु. डॉ. अर्चना, ब.कु. नम्रता, ब.कु. ज्योति, ब.कु. मीनाषी, विध्य के लोकप्रिय गीतकार मिलेश श्रीवास्तव को उपस्थित रही।



पुणे-भांडा सोसाइटी(महारा.)। महारा इंटरनेशनल एकराथे मे बीके स्टॉल का उद्घाटन करते हुए निरुपम गणकवाड, अण्णव, एम.पी.ए. ब.कु. अश्लीष, डायरेक्टर एम.पी.ए.एस फर्नीचर प्रॉवैट लिमिटेड, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. नीलमी बहन, ब्रह्माकुमारीज बिजनेस एंड इंडस्ट्री विंग की चीनल कोऑर्डिनेटर, ब.कु. उषा, ब.कु. राजवीर, बिजनेस विंग कोऑर्डिनेटर, मार्गट अन्वु, ब.कु. वैशाली, ब.कु. नीता तथा अन्य।



नांदेड-महारा.। ब्रह्माकुमारीज कन्हैयानगर किनवट सेवाकेन्द्र द्वारा रायचंगी के अवसर पर राजेश विष्णु टोंबरे के श्रेत में आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. सुनंदा, ब.कु. नागनाथ महादपुर, ब.कु. ज्ञानेश्वर मुखर्मी, डॉ. मिदुबाय कसेकर तथा अन्य।



पूर्णा-चुडावा(महारा.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. प्रणिता। मौके पर उपस्थित रहे जयश्री कटम, नगरसेविका मीनाताई कटम, डॉ. सुनंदा कस्तुरे, माया अग्रवाल, गीता रामचंदानी, विजयताई कापमे, मंगल बारडाले, नंदाताई वांगे तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
 संपादक - ब.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
 पोस्ट बॉक्स न-5, अन्वु रोड, राज. 307510
 संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414172087
 Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹-720
 Website: www.omshantimedia.org

सौंफ : गर्भियों में स्वास्थ्य का प्राकृतिक खजाना

1. शरीर को ठंडक प्रदान करती

गर्भियों में शरीर का तापमान बढ़ जाता है, जिससे बेचैनी और थकान महसूस होती है। सौंफ की तासीर ठंडी होती है, जो शरीर को अंदर से ठंडा रखती है।

सौंफ का पानी या शरबत पीने से लू लगने का खतरा कम होता है।

2. पाचन तंत्र को मजबूत बनाती

सौंफ का सबसे बड़ा लाभ पाचन शक्ति को सुधारना है। यह गैस, अपच और पेट फूलने जैसी समस्याओं को दूर करती है। भोजन के बाद सौंफ चबाने से खाना जल्दी पचता है। पेट दर्द और एसिडिटी में भी राहत मिलती है।

3. डिहाइड्रेशन से बचाव

गर्भियों में शरीर से पानी की कमी होना आम समस्या है। सौंफ का पानी पीने से शरीर हाइड्रेट रहता है। यह शरीर में इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखने में मदद करती है।

4. आँखों के लिए फायदेमंद

सौंफ आँखों की रोशनी के लिए भी लाभकारी मानी जाती है।

स्वास्थ्य

इसमें मौजूद पोषक तत्व आँखों को ठंडक देते हैं। रोजाना सौंफ का सेवन करने से आँखों की थकान कम होती है।

5. त्वचा को बनाती चमकदार

गर्मी में त्वचा पर दाने, पसीना और टैनिंग की समस्या बढ़ जाती है। सौंफ में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो त्वचा को साफ और स्वस्थ रखते हैं। सौंफ का पानी पीने से त्वचा में निखार आता है।

6. मुँह की दुर्गंध दूर करती

सौंफ का उपयोग माउथ फ्रेशनर के रूप में भी किया जाता है। इसे चबाने से सांस की बदबू दूर होती है। यह मुँह को ताजगी प्रदान करती है।

सौंफ एक प्राकृतिक औषधि है जो भारतीय रसोई में आसानी से मिल जाती है और स्वाद बढ़ाने के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत लाभकारी होती है। विविध रूप से गर्भियों के मौसम में सौंफ का सेवन शरीर को ठंडक प्रदान करता है और कई बीमारियों से बचाव करता है। आयुर्वेद में भी सौंफ को शीतल, पाचन में सहायक और शरीर को संतुलित रखने वाला माना गया है।

सावधानियाँ

सौंफ का सेवन सौंफित मात्रा में ही करें। अधिक सेवन से कुछ लोगों को एलर्जी या पेट संबंधी समस्या से जूझना पड़ सकता है। गर्भवती महिलाएँ सेवन से पहले डॉक्टर को सलाह लें।

जाता है। इसे चबाने से सांस की बदबू दूर होती है। यह मुँह को ताजगी प्रदान करती है।

7. वजन नियंत्रण में सहायक

यदि सही मात्रा में सेवन किया जाए तो सौंफ वजन घटाने में भी मदद कर सकती है। यह मेटाबॉलिज्म को तेज करती है। भूख को नियंत्रित करने में सहायक होती है।

8. हार्मोन संतुलन में मददगार

सौंफ महिलाओं के लिए विशेष रूप से लाभकारी होती है। यह हार्मोन को संतुलित करने में मदद करती है। पॉरियड्स के दौरान होने वाले दर्द और असहजता को कम करती है।

9. दिल के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी

सौंफ में पोटैशियम जैसे तत्व पाए जाते हैं जो हृदय के लिए अच्छे होते हैं। यह ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में मदद करती है। नियमित सेवन से हृदय स्वस्थ रहता है।

10. सौंफ के उपयोग के आसान तरीके

सौंफ को अपनी दिनचर्या में शामिल करना बहुत आसान है। भोजन के बाद एक चम्मच सौंफ चबाएं।

रात में सौंफ भिगोकरी सुबह उसका पानी पीएं।

सौंफ का शरबत बनाकर गर्भियों में सेवन करें।

अतः सौंफ एक छोटी-सी लेकिन बेहद गुणकारी औषधि है, जो गर्भियों में शरीर को ठंडक, पाचन शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती है। यदि इसे सही मात्रा और सही तरीके से उपयोग किया जाए, तो यह कई स्वास्थ्य समस्याओं से बचाव कर सकती है। इसलिए इस गर्मी अपने आहार में सौंफ को जरूर शामिल करें और प्राकृतिक तरीके से स्वस्थ जीवन का आनंद लें।



अमरावती-रुक्मिणी नगर(महाराष्ट्र)। ब्रह्मकुमारिज समाज सेवा प्रभाग को ओर से श्रेष्ठ नागरिकों के सम्मान एवं सत्कार समारोह के दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में सेवान्वित संचालिका ब.कु. सीता बहन, ब.कु. तेजल बहन, ब.कु. प्रमोद, ब.कु. रमेश तथा अन्य अतिथिगण की उपस्थिति थी।



राजलक्ष्मी-गुज। रमेशभाई ओझा द्वारा स्थापित देविका विद्यापीठ में मातृ वंदना कार्यक्रम में सम्बोधित करने हेतु स्थानीय सेवान्वित संचालिका ब.कु. अनु। मँके पर उपस्थित रहे स्टूडेंट्स, अधिभावक एवं शिक्षकगण।



जयलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'वंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' शीर्षक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए श्रीमती सारिका पाण्डेय, रिटायर्ड डी.एस.पी., डॉ. निशा साहू, स्त्री रोग विशेषज्ञा, श्रीमती श्रद्धा साहू एवं श्रीमती सपना खंडेलवाल, शिक्षिका, सेवान्वित संचालिका ब.कु. भावना, ब.कु. वर्षा तथा अन्य गणमान्य महिलाएँ।



केंद्रोद-गुज। होली पर्व के उपलक्ष्य में होली प्रायश्चित्त के पश्चात् समूह भित्र में विधायक देवाभाई मालम, डॉ. प्रेमराज धनेश, अखणी चिन्ता विद्यार्थी ओडेरा, ब.कु. रुमा, ब.कु. पुष्पा, ब.कु. मीता, ब.कु. गीता तथा अन्य नगर के गणमान्य नागरिका।



डभरपुर-हरपालपुर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'महिलाएँ - नये भारत की ध्वजवाहक' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. अनुष्ठा सिंह, चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, ममता बेमरुखिया, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष, पूनम गंगेले, प्यूजिक टीचर, सांटीपनि विद्यालय, नौगाँव, डॉ. मनीष त्रिपाठी, शिक्षक, मुक्त सक्सेना, योग टीचर, ब.कु. नंदा, नौगाँव, ब.कु. पूनम तथा अन्य गणमान्य महिलाओं की उपस्थिति रही।



विदिशा-बालाजीपुर(म.प्र.)। शक्ति आराधना सांस्कृतिक संस्था संगठन फूल फग कार्यक्रम में उपस्थित रहे स्थानीय सेवान्वित संचालिका ब.कु. सपना, ब.कु. जूनी, जिला पंचायत अध्यक्ष गीता रघुवंशी, डॉ. गिधिलेश टाणी तथा अन्य।



नरसिंहपुर-म.प्र.)। 90वीं त्रिभूति शिव जयंती के पावन अवसर पर दिव्य संस्कार भवन हाउसिंग बोर्ड कॉलेजी द्वारा आयोजित 'शिव संदेश शोभायात्रा' को तारी झण्डों दिखाकर खाना करते हुए पूर्व विधायक सुनील जायसवाल, भाजपा नगर अध्यक्ष, ब.कु. कुसुम बहन। मँके पर उपस्थित रहे नगर पालिका अध्यक्ष पंडित नीरज महापात्र, सुनील कोठारी, पर्यटन जन परिषद अध्यक्ष गणेश चतुर्वेदी तथा अन्य।



मुंबई-पवई(महाराष्ट्र)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित दीप प्रज्वलन कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे स्थानीय सेवान्वित संचालिका ब.कु. जानकी बहन, केतन साहू, नॉर्थ इस्ट डिस्ट्रिक्ट कोस प्रिंसिपल, प्रयोग मॉटेरियल चर्क प्रिंसिपल वार्ड 122, एडवोकेट विजय कुमार कर्नाठिया, कोऑर्डिनेटर विद्यार्थी कौशर, अरुण वडे, सेवान्वित प्रिंसिपल विद्यार्थी, अशोक पांडे, संजय कर्कर तथा अन्य।



जावरा-म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'सुशाहाल महिला, सुशाहाल परिवार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब.कु. सावित्री, ब.कु. शिवकन्या तथा अन्य गणमान्य महिलाएँ।

जब मन के मालिक बनते, तब हमारा घर स्वर्ग बन जाता



उमरगामपुर-प. बंगाल। विधान नगर में आयोजित कार्यक्रम में आयोजित भारत की महान्महिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर झंडवरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. पुष्पा व ब.कु. विंदा।



रिक्त-म.प्र। होली र्व एवं भाई दूज के अवसर पर जय पुरुषार्थों व लोक सभ्यता परिवार कल्याण तथा विवेकता विद्या विभाग के प्रभारी मंत्री गणेश शुकल के अध्यक्ष विगत निव निवास स्थान पहुंचकर उन्हे आर्य भूति का किल्ला लाने और भाई दूज के आध्यात्मिक महत्व से अवगत करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. लता दीदी, ब.कु. प्रभा, ब.कु. नमता, ब.कु. शीला, ब.कु. मिनाक्षी, ब.कु. लक्ष्मी, ब.कु. रवि, ब.कु. रोहित, ब.कु. सुधा, रवि कान्त आर्य विकास विभागीय सहित भ्रमण पर्यटकों के अनेक पदोन्नतों एवं कार्यकर्ता।



अहमदाबाद-गुज। वैश्विक संस्कृति : प्रेम-शांति-सद्भावना प्रोजेक्ट कार्यक्रम के दौरान युवा प्रभाग एवं कला संस्कृति प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब.कु. चंद्रिका दीदी को 'वर्ल्ड रिकॉर्ड ऑफ एक्सीलेंस/लॉन्ग' से सम्मानित करते हुए एनआईएमएसएफ के अध्यक्ष प्रोफेसर सिल पन्तु, सामाज्यसेवक श्री श्री 108 हेमचन्द्र पशुपति महाराज, करनाल के विधायक जगमोहन आनंद, मेयर रेनु कला गुप्ता, कला एवं संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब.कु. प्रेम दीदी, करनाल, ब.कु. पुनम तथा अन्य।



बैतूल-म.प्र। किला चिकित्सालय बैतूल द्वारा आयोजित 'रक्तसेवा श्रेय' सम्मान समारोह एवं रक्तदाता प्रेरण प्रशिक्षण कार्यक्रम में ब.कु. मुनीश व ब.कु. पूर्णिमा को स्वास्थ्य सेवाओं में सहयोगी बनने के लिए योग्यो गैट कर सम्मानित करते हुए नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बारकर। साथ ही भाजपा किला अध्यक्ष सुधाकर पवार, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, जनजातीय केंद्रीय राज्य मंत्री डी.डी. उईक, भास सरकार, विधायक योगेश पांडेय तथा अन्य।



नवसारी-बीके पार्षद (गुज.)। इंटरनेशनल एमोसा डे के उपलक्ष्य में आयोजित दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में पी.एस.आई. मन्नेरम कोरीक, डी.सी.पी.ओ. हेमलता, ए.एस.आई. लक्ष्मी देवसुथ, ज्योति सम्मान की अध्यक्ष सुजाता पटेल, अखिल हिंदू महिला परिषद की निजामा पारिख, स्नेह सेतु संस्था की अध्यक्ष चेतना बौडला, करिमा, राजयोगिनी ब.कु. शोभा दीदी, राजयोगिनी ब.कु. भानु दीदी, ब.कु. रोहा तथा अन्य अतिथिगण।



मानसरो-महारा. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर दीप प्रज्वलन द्वारा शुभारम्भ करने के पश्चात् समूह चित्र में धानेदार नैमा पोहेकर, नगरसेविका रेखा ठाकरे, महेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष रमा गुठी, समाजसेविका किरण पट्टमपरकर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. राजनी, ब.कु. विजया एवं ब.कु. वैशाली।

ब्रह्माकुमारिज संस्थान में मुरली(परमात्म महावाक्य) में दिव्य शिक्षा मानव जीवन को सरल, सहज और श्रेष्ठ बनाने का मार्ग दिखाती है। "दाता बनो, मन के मालिक बनो, घर को स्वर्ग बनाओ" - यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जीवन जीने की कला है।

परमपिता परमात्मा शिव हमें यह सिखाते हैं कि हम सभी आत्माएं दाता के बच्चे हैं। हमारा मूल धर्म ही देना है- सुख देना, शांति देना, प्रेम देना। लेकिन जब तक हम स्वयं भीतर से भरपूर नहीं होंगे, तब तक दूसरों को कुछ भी दे नहीं सकते। इसलिए सबसे पहले अपने मन को शांति, प्रेम और शक्ति से भरना आवश्यक है। जब एक व्यक्ति सुखी होता है, तो उसका परिवार सुखी होता है और जब परिवार सुखी होता है तो समाज और संसार में सुख का विस्तार होता है। यही स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का सिद्धांत है।

जीवन में अनेक परिस्थितियाँ आती हैं, जहाँ लोग हमें दुःख देते हैं या हमारी भावनाओं को आहत करते हैं ऐसे समय में मुरली में बाबा कहते हैं ना कि - "न दुःख लेना है, न दुःख देना है।" इसके स्थान पर हमें दुःख देनी है। यदि कोई हमें काट भी दे, तो हमें दिल से "मेरा बाबा" कहकर परमात्मा को याद करना चाहिए। जैसे एक

छोटा बच्चा किसी भी कठिनाई में अपने माता-पिता की शरण में जाता है, वैसे ही हमें भी परमात्मा की शरण में जाना चाहिए। वहाँ हमें शक्ति, समाधान और सच्चा सहारा मिलता है।

मुरली में आत्मिक प्रेम की भी विशेष महत्ता बताई गई है। आज संसार में अधिकांश

कहता है कि कस्तुरिक परिवर्तन बहुत ते वहाँ, बहिर गीतर से हुरु होत है। जब मनुष्य अपने मन्, पिताओं और संस्कारों पर विचार प्रण कर लेत है, तभी वह स्वयं के लक्ष्य पूरे संसार में तुल्य और शक्ति की लहर फैल सकता है।

प्रेम शर्तों पर आधारित है, लेकिन परमात्मा हमें सिखाते हैं कि सच्चा प्रेम निःस्वार्थ और आत्मिक होता है। हमें हर आत्मा के प्रति समान ही सहनशक्ति को जीवन में धारण करना भी आवश्यक है। हमें मूर्ति के समान स्थिर और शांत बनना है। जैसे मंदिर की मूर्ति हर परिस्थिति में शांत रहकर आशीर्वाद देती है, वैसे ही हमारा जीवन भी ऐसा होना चाहिए कि हमारे संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को शांति और सकारात्मकता का अनुभव हो। हमारा घर भी ऐसा स्थान बने जहाँ से दुआएं मिलें, न कि अशांति।

पुराने संस्कार जैसे क्रोध, लोभ और अहंकार बार-बार सामने आते हैं लेकिन हमें मन का मालिक बनकर उन्हें नियंत्रित करना है। जैसे हम छोटे बच्चे को गलत कार्य करने से रोकते हैं, वैसे ही अपने मन को भी गलत विचारों से हटाना है। दृढ़ संकल्प और निरंतर प्रयास से हम अपने संस्कारों को बदल सकते हैं।

अंततः, परमात्मा हमें प्रेरित करते हैं कि हम अपने जीवन को बदलकर दूसरों के लिए उदाहरण बनें। जब हम दाता बनते हैं, दुआओं का सागर बनते हैं और मन के मालिक बनते हैं, तब हमारा घर स्वर्ग बन जाता है और यही परिवर्तन पूरे विश्व में फैलता है।



मुंबई-घाटकोपर(महारा.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ब्रह्माकुमारिज योग भवन द्वारा पीस पार्क में 'नारी सम्मान-पहचान आलबल' की विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए वीरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब.कु. विश्वप्रिया। साथ ही ब.कु. बहन तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।



चाशी-नवी मुंबई(महारा.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी ब.कु. शीला दीदी, एनपी रोष्टे एवं रोष्टे समाज की महिलाएं।



चंदला-म.प्र। होली भस्मेसव पर 'सकारात्मक मीडिया समाज परिवर्तन का सरलत आधर' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब.कु. भारती, मुख्य वक्ता ब.कु. सुलेखा, क्षेत्रीय पत्रकार विनय निगम, राजेश निगम, राजेश सोनी, राजेश शुक्ला, रवि राजपूत तथा अन्य।



पन्ना-म.प्र। महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में उपस्थित रहे जिला पंचायत अध्यक्ष मोना राजे, प्रो. उमा त्रिपाठी, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष शारदा पाठक, पूर्व प्राचार्या निशा जैन, नगर पालिका उपाध्यक्ष आशा गुप्ता, सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. सीता तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।



नागठाणे-महारा. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'ची महारम्- स्वर्णिम भारत' कार्यक्रम के दौरान डॉ. ब.कु. सुनर्षा व ब.कु. लक्ष्मी को डॉ. ओझकर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में अडिस्ट्रेट पुलिस इंस्पेक्टर प्रशांत हुले, किला सदस्य अनीत सखुडे, पंचायत सदस्य संतोष पटेल तथा अन्य अतिथिगण।



खजुराहो-म.प्र। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में उपस्थित सब इंपेक्टर संतोष सिंह, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. विद्या तथा अन्य।

ईश्वरीय खजानों की खजांची: ईशु दादी



**ब्रह्माकुमारीज
ईश्वरीय विश्व
विद्यालय के इतिहास में**
कुछ ऐसी महान आत्माएं हैं,
जिनका जीवन मौन रहकर भी गहरी
प्रेरणा देता है। दादी ईशु ऐसी ही एक
तपस्विनी, राजयोगिनी और अत्यंत
विश्वसनीय आत्मा थीं। उनका
सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय यज्ञ की
सेवा, निष्ठा, ईमानदारी और
गोपनीयता का अद्वितीय
उदाहरण रहा है। उनकी
पुण्यतिथि पर उन्हें स्मरण
करना, उनके गुणों
को अपने जीवन
में अपनाने की
प्रेरणा देता है।



रखती थीं। उनका कार्य इतना व्यवस्थित और सटीक होता था कि वह आज भी एक आदर्श के रूप में माना जाता है। इस दृष्टि से वे यज्ञ खजांची के रूप में भी जानी जाती थीं।

दादी ईशु का स्वभाव अत्यंत शांत, गंभीर और रहस्यमयी था। वे कम बोलती थीं, लेकिन उनकी समझ और अवलोकन शक्ति अत्यंत गहरी थी। एक बार किसी आत्मा को देखने के बाद वे उसके संस्कारों और विशेषताओं को याद रखती थीं।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी - गोपनीयता, वफादारी और ईमानदारी। वे हर कार्य को पूर्ण निष्ठा और विश्वास के साथ करती थीं। बाबा जो कहते थे वे उसी को पूरी सच्चाई और समर्पण से निभाती थीं।

दादी ईशु ने जगदंबा सरस्वती, ब्रह्मा बाबा और बाद में दादी प्रकाशमणि जी के

दादी ईशु ने मात्र 9 वर्ष की आयु में ईश्वरीय यज्ञ में प्रवेश किया। यह उनकी विशेषता थी कि स्वयं परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से उनकी पालना की, उन्हें पढ़ाया-लिखाया और आध्यात्मिक जीवन के संस्कार दिए। इतनी छोटी उम्र में ही उन्होंने यज्ञ के प्रति जो समर्पण और लगन दिखाई, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। दादी ईशु की एक विशेष सेवा थी, जो थी बाबा के महावाक्यों को शॉर्टहेड में लिखना। जब ब्रह्मा बाबा के माध्यम से शिव बाबा मुरली उच्चारण करते थे तो वे उन्हें तुरंत शॉर्टहेड में लिखती थीं। बाद में उन्हीं लिखित महावाक्यों को सुंदर और स्पष्ट अधारों में तैयार किया जाता था, जो सभी सेवाकेन्द्रों तक पहुँचाया जाता था।

इस प्रकार वे परमात्मा के ज्ञान को सहेजने और फैलाने की महत्त्वपूर्ण कड़ी बनीं।

वे केवल एक लेखक ही नहीं, बल्कि ब्रह्मा बाबा की परमनल सेक्रेटरी भी रहीं। यज्ञ में होने वाला सारा पत्र-व्यवहार उनके माध्यम से ही संचालित होता था। सेवाकेन्द्रों में आने वाले पत्रों को पढ़कर बाबा को सुनाना, उनके समाचार देना और फिर बाबा के निर्देशानुसार उत्तर लिखना - यह सम्पूर्ण जिम्मेदारी दादी ईशु अत्यंत कुशलता से निभाती थीं।

समय के साथ, जब वे बड़ी हुईं, तो उन्होंने यज्ञ के सबसे महत्त्वपूर्ण विभाग - फाइनेंस और अकाउंट्स की जिम्मेदारी संभाली। यज्ञ का पूरा हिसाब-किताब वे अत्यंत एकदूसरी और ईमानदारी से

दादी ईशु के साथ निजी अनुभव

- राजयोगी ब्र.कु. नारायण

कुछी जगदीश्वर के साथ विचार से रहने और उनके संकेतों को सुझाकर पता हुआ कि वह का प्रथम प्रोजेक्ट बना विशेष छोड़ना हुआ, कि उनके सफल फलनों और अकारण की विशेषताएँ खुले मिली। इस प्रकार प्रकृतिक दादी ईशु के साथ के जाने, उनके कार्य करने की लेनी को लक्ष्यिक से देखने का अन्वेष विभाग।

जैसे उनके जीवन से सीखा कि वह का कार्य केवल एक विशेषता नहीं, बल्कि एक प्रिय दूर है जिसे पूरी ईमानदारी, फलनों और सजावट के साथ विचार चाहिए। वे अर्थात् सभी, एकाग्र और सटीकता के साथ हर कार्य को सफल करती थीं।

उनको सविधता से सहायता मिले वह भी अकुल हुआ कि वह भी विश्वी तो प्रथम का कुशल न हो, इसके लिए हर उदात्त सेवा-सहायक और विशेषता से उनका आग्रहक है। आज भी उनके द्वारा लिखाया गया सिद्धांत - ईमानदारी, जोशकर्म और सफलता को अपने जीवन में धारण करने का प्रथम करता है।

निभाया। सन् 2021 में उन्होंने अपने पुराने शरीर का त्याग कर अशक्त स्वल्प धारण किया। किंतु उनके द्वारा सिखाए गए संस्कार जैसे कि एकदूसरी अकारण टिं न, गोपनीयता, वफादारी और ईमानदारी आज भी यज्ञ में जीवंत है और सभी के लिए मार्गदर्शक है।

उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची सेवा केवल बड़े कार्यों में नहीं, बल्कि छोटी-छोटी जिम्मेदारियों को भी पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से निभाने में है।

ऐसी महान तपस्विनी, शांति की प्रतिमूर्ति, राजयोगिनी दादी ईशु को उनकी पुण्यतिथि पर हम हृदय से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनका जीवन सदैव हमें सच्चाई, निष्ठा और समर्पण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा।

साथ ही यज्ञ की सेवा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाईं। उन्होंने हर समय, हर परिस्थिति में अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से निभाया।



इंदौर-ज्ञान शिखर (म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए इंदौर क्षेत्र निदेशिका राजयोगिनी ब.कु. हेमलता दीदी तथा अन्य विशिष्ट नारी शक्ति।



स्वातंत्र्य-दृष्ट गंज (म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज प्रभु उपहार भवन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'बंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' थीम के अंतर्गत 'राजयोग संस्कार और सत्यगुणी मूक्तों से राष्ट्र निर्माण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्वयं सिद्धा समूह की निर्देशिका श्रीमती मन्दिता शर्मा, वरिष्ठ स्त्री एवं प्रभुति रोग विशेषज्ञ डॉ. स्वाति जोशी, वरिष्ठ स्त्री एवं प्रभुति रोग विशेषज्ञ डॉ. अनुष्ठा शर्मा, नारायण ई टेक्नो स्कूल की प्रिंसिपल निधि कुलकर्णी, नगर निगम से समाज अधिकारी पूर्वी अग्रवाल, समाजसेविका पूर्णिमा अग्रवाल, समाजसेविका श्रीमती आशा सिंह, ब.कु. महिमा, ब.कु. डॉ. गुरवर्ण सिंह, ब.कु. धरलाद तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।



नवसारी-गुज.। इंटरनेशनल कुमेन्स डे के उपलक्ष्य में ज्वालामुखी सेवाकेन्द्र पर कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए डॉ. भूमिका घोषाजिवा, डॉ. रूपल कर्षीरिया, कोमल जो, हीरल, राजयोगिनी ब.कु. भानु दीदी एवं ब.कु. अल्पना।



जिलासपुर-सालापासा (छ.ग.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शिव कर्णवी भवन में आयोजित 'बंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. मधु, महापौर श्रीमती पूजा विधानी, स्वयं सेविका महिला संस्था की अध्यक्ष रंजीत कौर दुआ, आदर्श पंजाबी महिला संस्था की अलका पम्पो गुम्बर, सेंटरी क्लब ऑफ क्राउन अधिका गैरु बिस्ट, राजनीतिज्ञ एवं समाज सेविका शिल्पी तिवारी, श्रीमती शोच करायप डिप्टी रेजर फर्स्ट डिपार्टमेंट, श्रीमती मनोषा झा, समाज सेविका, श्रीमती रंजित लता जेठिका एवं वसुधैवकुटुम्बक क्लब की पूर्व जिला अध्यक्ष तथा अन्य गणमान्य महिलाओं की उपस्थिति रही।



इंदौर-कालापी नगर (म.प्र.)। इंटरनेशनल कुमेन्स डे के अवसर पर आयोजित 'बंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' विषय पर परिचर्चा के दौरान दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में डॉ. योगिता जैन, गार्फद शिक्षा संदीप दुबे, अमिस्टेट प्रोफेसर प्रिंसस सत्रावला, हाईवीज विभा संसलक रचना महंत, उन्मुक्त अन्न, अन्नम की डायरेक्टर चौधरी वैज, ब.कु. जयंती दीदी एवं ब.कु. सुजाता।



शेरांव-महारा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दीप प्रज्वलन के पश्चात् समूह चित्र में कठुणा सलामपुरिया, सचिव लिनेस क्लब, कविता गुप्ता, अध्यक्ष अग्रवाल महिला मंडल, शीतल नारनोलिया, अध्यक्ष अग्रवाल बहु बेटी मंडल, सुचिता काले, नगर सेविका, कविता पाटिल, प्राचार्य कॉन्वेंट स्कूल, अर्चना कलमशेरे, ग्रामसेवक, ब.कु. शारदा बहन एवं ब.कु. पूजा।

समाज के विभिन्न क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य करने हेतु महिलाओं को किया सम्मानित



उड़ोदा-अरलादरा(गुज.)। अरलादरा सेवाकेन्द्र में 'वंदे मातरम् - स्वर्णिम भारत' थीम पर महिला दिवस मनाया गया, जिसमें उड़ोदा में विभिन्न समाज हितकारी कार्य क्षेत्रों में अपनी रचनात्मक भूमिका द्वारा उल्लेखनीय योगदान देने वाली 26 प्रतिभावाली महिलाओं को सम्मानित किया गया। शिक्षा, स्वास्थ्य, कला एवं समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अमूल्य सेवा के लिए उदाहरण बनी हुई इन नारी शक्तियों को प्रोत्साहित किया गया। राज्योगिनी ब्र.कु. अमर दीदी, अहमदाबाद ने कहा कि जीवन में अनेक दुःखों का कारण अहंकार है। इसे मिटाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान से आंतरिक ज्योति जगायें। सुमनदीप यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर डॉ. मेघना बेन जोशी ने कहा कि हर नारी के जीवन के संघर्ष के समय आत्मसम्मान ही नारी को सबसे बड़ी शक्ति है, जिसे हमें हर हाल में कायम रखना है। इसीलिए मन को शक्तिशाली रखना भी हमारी सफलता का एक प्रमुख अंग है, जिसका हमें ध्यान रखना है। बिलाबोंग स्कूल की प्रिंसिपल डॉ. प्रीति बेन श्रीमाल ने कहा कि

नारी शक्ति के अंदर देने का गुण स्वाभाविक है लेकिन इस स्वभाव के साथ-साथ हमें अपने महत्व को भी समझना है और स्वयं अपने आप को भी सम्मान देना है। मां शक्ति गरबा गुप की डायरेक्टर आरती बेन ठक्कर ने कहा कि नारी मां, बहन, पत्नी आदि की कई भूमिकाएं निभाती है। ऐसे में मन की शांति के लिए राजयोग मेडिटेशन को जीवन में अपनाना चाहिए। ब्र.कु. रिया बेन वैद्य ने कहा कि जिन लोगों ने अभी तक राजयोग नहीं किया है वह सेंटर पर आएं और एक बार जरूर राजयोग सीखें। क्योंकि आगे चल कर परिस्थितियां और भी खराब

आने वाली हैं तो ऐसे समय में हमें परमात्म शक्तियों की आवश्यकता होती है और वो सिर्फ परमात्मा से ही मिलेगी। सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. अरुणा ने नारी शक्ति को देवियों की आठ भुजाओं के आध्यात्मिक अर्थ के बारे में बताते हुए कहा कि हम सभी के अंदर अनेक शक्तियां हैं। उनमें 8 मुख्य आध्यात्मिक शक्तियों को ही देवियों की आठ भुजा के रूप में प्रदर्शित किया जाता है और नारी शक्ति उन शक्तियों को जब अपने जीवन में धारण करती है तो वह शक्ति स्वरूपा हो जाती है। उन्होंने फिर उन आठ शक्तियों के विषय में स्पष्ट किया और कॉमिटी के द्वारा सबको गहन आत्म अनुभूति एवं शक्ति का अनुभव कराया। नारी की महिमा पर सुंदर कविता, आधुनिकता और संस्कारों के संगम के साथ महिला उत्थान विषय पर सुंदर नाटिका एवं नृत्य प्रस्तुति के द्वारा सभी को मनोरंजन कराया। मौके पर ब्र.कु. पूनम, कॉर्पोरेट संगीता बेन चोकसी, पी पी श्रॉफ गुप की ओनर परेशा बेन ठक्कर आदि की भी उपस्थिति रही।



भौतिकता में ही न खो जाएं नारी, आध्यात्मिकता को भी जीवन में अपनाएं : श्रीमती सिन्हा

रावपुर-उ.प्र.) अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्व विद्यालय के महिला प्रभाग द्वारा विघ्नसभा मार्ग स्थित शान्ति सरोवर ग्रीटो सेंटर में महिला जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन 'वंदे मातरम् से स्वर्णिम भारत' विषय पर आयोजन किया गया। सम्मेलन में मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी सरय ने कहा कि हम भौतिकता में लिप्त हो रहे हैं। अब इससे दूर रहकर साधना की जरूरत है। कल क्या होगा नहीं मालूम इसलिए वर्तमान को जीना सीखें। अच्छे विचारों को फैलायें और मानव जीवन को सफल बनायें। मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हो उस मार्ग पर चलना जरूर है। उन्होंने कहा कि जिन्दगी कठिन नहीं है, बल्कि सहज है। कठिन हम बना लेते हैं। इसलिए राजयोग को जीवन में अपनाएं औरों को भी प्रेरणा दें। बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष डॉ. वीर्णिका शर्मा ने कहा कि यदि मातृशक्ति को आगे बढ़ाना है तो उन्हें शिक्षित करना होगा। मन विजय से रण विजय होगा। शिक्षा हमें दिशी देती है, पैसा दिलाती है, अर्थपूर्ण जीवन उपलब्ध कराती है। लेकिन यह अपना विद्या है। लेकिन आज हम बात कर रहे पर विद्या की। वह आत्मावलोकन कराती है। इसके लिए आत्मा और परमात्मा का ज्ञान जरूरी है। रावपुर सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान पूरे विश्व में

एकमात्र ऐसी संस्था है जिसका पूरा संचालन मातृ शक्ति द्वारा किया जाता है। परमापिता परमात्मा ने ज्ञान का कलश माताओं-बहनों के सिर पर रखा है। बाहरी चक्काचौध में न खो जाएं, अपने अन्दर भी झाँक कर देखें। थोड़ा समय निकालकर राजयोग का अभ्यास करें। पुलिस अधीक्षक, आईपीएस श्रीमती श्वेता श्रीवास्तव सिन्हा ने कहा कि सनातन धर्म में पुरुष और नारी को समान दर्जा प्राप्त है। घर परिवार में बच्चे को शिक्षित करने का कार्य माताएं करती हैं। इसलिए महिलाओं के लिए शिक्षा का महत्व बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। भौतिकता में ही न खो जाएं। आध्यात्मिकता को जीवन में अपनाएं। भारतीय जनता पार्टी की प्रवक्ता श्रीमती शताब्दी पाण्डे ने कहा कि नारी व्यक्ति नहीं, शक्ति है। वह बचपन में खेलकूद, पहाड़ पर चढ़ने आदि कार्यों में अत्यंत कुशल थीं लेकिन वह बहुत उग्र स्वभाव की थी। जब उन्होंने राजयोग सीखकर उसका अभ्यास करना शुरू किया तो उनका स्वभाव ही बदल गया। अब वह सबके प्रति अपनेपन का भाव रखती हैं। राजयोग से हमारे अन्दर की शक्तियां जागृत हो जाती हैं। राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. रश्मि व पुलिस महानिदेशक की धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति गौतम ने भी अपने विचार रखे। नगर के बाल कलाकारों ने नारी शक्ति के महत्व को उजागर करते हुए सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. अर्पिता ने किया।



रत्नाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'वंदे मातरम्- स्वर्णिम भारत' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ईश्वरीय सौगत भेंट करने के परचात् समूह चित्र में डिटी कलेक्टर राक महंत, न्याय चहसीलापर प्रतिभा भास्कर, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी सुनीलचंद्र शर्मा, डॉ. गौता दुबे, जनपद सदस्य मंगला देवडा, लायंस क्लब की पूर्व प्रिजिडेंट शक्ति संघवी, नागली नगर परिषद उपाध्यक्षा पुजा गोगो, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता, ब्राह्मण सम्मान व पौरकांत सम्मान को माताएं तथा अन्य।



कामठी-आदर्श नगर(म.प्र.)। इंटरनेशनल वुमेन्स डे पर आयोजित कार्यक्रम के परचात् समूह चित्र में ब्र.कु. शोभा, ब्र.कु. खटना, उपसभापति धियलताई साबळे, मुख्यअध्यक्षिका सुनीता ताई रेवतकर, क्षेत्रीय विद्यालय की अनीता मैम, तहसील कार्यलय की नंदा सोनसर मैम, माटा की पुलिस पार्टिल कंदना चकोले मैम, बैंक ऑफ महाराष्ट्र की आयुष्माली कुसुमताई पोतनवार एवं तथा माता जी।



जकातवाडी-सातारा(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित रहे सरपंच श्रीमती अक्षिपते दलवी, पंचायत समिति सदस्य नंदराज श्रीमती कोमल दलवी, प्रधनअध्यक्षिका श्रीमती शारदा भिलावे, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशा तथा अन्य।



राजनंदगांव-छ.स। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अंतर्गत आयोजित 'वंदे मातरम्- स्वर्णिम भारत' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करने के परचात् समूह चित्र में पूर्व मापौर हेम देतनुच, अधिकता शारदा तिवारी, पार्षद मणि भास्कर गुप्ता, प्राचार्य भारती गौते, वर्षा अग्रवाल, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य।



डुडौ-गणेशी बिहार(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं पाप उत्सव के अवसर पर साई गणेशी बिहार स्थित जगदीप भवन में 'वंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' थीम पर आयोजित सम्मान समारोह एवं प्रेरणादायी संगोष्ठी सह दीप प्रज्वलन द्वारा शुभारम्भ करते हुए शहर की गणमान्य महिलाएं।



छोटा उदुपुन-गुज। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. मॉनिका, श्रीमती सोनल देसाई, कौशल, श्रीमती अरुण पटान, सम्मान सौकरिण एवं कॉर्पोरेट, नगर सेवा सदन, श्रीमती मनोका फारेज, नगरत राज्य योग बोर्ड की डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर, श्रीमती दीपिका पटेल, योग केंद्र तथा अन्य।



सिधवी-म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में शान्ति शिक्षक के सद्भावना सम्पादन में आयोजित भारत का गौरव-नारी शक्ति इस कंपटीशन परचात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति संग बाल कलाकार एवं ब्रह्माकुमारी बहन।



पौरावरा-गुज। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'सखी क्लब ऑफ पौरावरा' में आयोजित कार्यक्रम में महिलाओं को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सीता बहन। साथ ही सखी क्लब व पौरावरा जिला भाजपा प्रमुख डॉ. जेतना तिवारी तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।



नांदेड़-कंधार(म.प्र.)। डीआईजी शहजो ठमाप को परमात्म संदेश देने के परचात् ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

महिला दिवस पर...

सुसंस्कृत नारी समाज में शांति, प्रेम और संस्कारों की आधारशिला बन जाती

नई दिल्ली-हरि नगर। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'स्वर्णिम भारत की नींव - सशक्त महिला' विषय पर कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों से आई प्रतिष्ठित महिलाओं ने मंग लोकर नारी शक्ति और आध्यात्मिक मूल्यों का संदेश दिया। कार्यक्रम की शुरुआत ब्रह्माकुमारीज के परिचय, वीडियो और सामूहिक राजयोग मेडिटेशन से हुई। इसके बाद ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा पौधे व तिलक के साथ सभी सम्माननीय महिला अतिथियों का स्वागत किया गया। कुमारी अर्कावि द्वारा दिव्य गीत पर स्वागत नृत्य की प्रस्तुति दी। हरि नगर की वरिष्ठ शिक्षिका ब्र.कु. स्नेहा ने ब्रह्माकुमारी महिला प्रभाग का परिचय दिया और आध्यात्मिक सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाएँ समाज में सकारात्मक परिवर्तन कैसे ला सकती हैं इसपर अपने विचार रखे। जल मार्ग मंत्रालय की डायरेक्टर श्रीमती सोमा सुरी, नगर निगम दिल्ली की काउंसिलर श्रीमती रामिंदर कौर, डीडी न्यूज



हिन्दी की एडिटर श्रीमती संगीता, सुप्रीम कोर्ट की वकील श्रीमती मधु तलवार और समाजसेवी श्रीमती सोनिया सहानी ने अपने प्रेरणादायक विचार साझा किए। इस अवसर पर सिस्टर जूली ने नारी

शक्ति की शोभा पर एक शानदार नृत्य की प्रस्तुति दी... वहीं और श्रीमती संजना ने महिलाओं पर एक खास कविता पाठ कर नारी शक्ति की महिमा की। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता राजयोग शिक्षिका द्वारा

सेक्टर-7 की ब्र.कु. नीलम ने अपने संबोधन में कहा कि जब महिला अपने आत्मिक स्वरूप को पहचानती है, तब वह परिवार और समाज में शांति, प्रेम और संस्कारों की आधारशिला बन जाती है।

कार्यक्रम के दौरान सभी मुख्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलन समारोह में मौजूद सभी महिलाओं को आत्म ज्योति को जाग्रत करने और नारी सशक्तिकरण का संदेश दिया। हरि नगर उपक्षेत्रीय निदेशिका, सिक्योरिटी सर्विसेज विंग की अध्यक्ष राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने सभी को अपने अंदर की नारी शक्ति को राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से जगाने की प्रेरणा दी। आपने कहा कि आध्यात्मिक मूल्यों द्वारा सशक्त महिला ही स्वर्णिम भारत की नींव रख सकती है। आगे कहा कि परमपिता परमात्मा ने स्वर्णिम भारत बनाने की परिकल्पना को साकार करने के लिए महिलाओं को ज्ञान कल्प दिया और उनको सम्मान देकर ऊंचा उठाया। हरि नगर की राजयोग टीचर ब्र.कु. ज्योति ने सभी को राजयोग मेडिटेशन को गहन अनुभूति कराई। जिससे सभा में मौजूद सभी नारी शक्तियाँ आत्मिक शांति और शक्ति से भर गईं।

विश्व परिवर्तन की सेवा में आजीवन समर्पित राज्य के ब्रह्माचारी युवाओं का सम्मान

राजकोट हेपपी विलेज(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्रों पर समर्पित रूप से सेवा देने वाले 108 भाइयों का शानदार सम्मान समारोह 'राजकोट हेपपी विलेज' में आयोजित किया गया। त्याग, तपस्या और विश्व सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले राजरक्षि, तपस्वी कुमारी सचमुच समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। ये संदेश पहुंचाने के लक्ष्य से आयोजित समारोह में युवा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी ने लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि ये सभी वो युवा भाई हैं जिसने सभी मोह, ममत्व, ऐशों-आराम छोड़कर परमात्मा पर आत्म समर्पण हो गए। मुझे एक-एक युवा से विवेकानंद, दयानंद आदि जैसे महान व्यक्ति की महानता नजर आती है। ये सम्मान आदर करता एक दिल का भाव है, उर्मि है। ब्रह्माकुमारीज एडिशनल सेक्रेटरी जनरल राजयोगी ब्र.कु. मूर्युंजय ने गुजरात की गरिमा बढ़ाते हुए कहा कि गुजरात माना गुजर गयी रात... अभी अंधेरा नहीं... सवेरा ही होगा... ये सब समर्पित युवा धन अपनी पवित्रता की शक्ति से गुजरात तो स्या पूरे विश्व को तेजस्वी, ओजस्वी बनाएंगे और परमात्मा के विश्व परिवर्तन के कार्य को और ही त्वरित गति से स्वर्णिम भारत की परिकल्पना को घरा पर उतारेंगे। मैं ऐसे महान राजयोगी ब्रह्माचारी, ब्रह्माचारी युवाओं का दिल की गहराइयों से आदरपूर्वक सम्मान करता हूँ। इस अवसर पर आर.के. यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. अमित लाठीगार ने कहा कि दूसरों के लिए जीना यही सच्चा जीवन है। ये बात ब्रह्माकुमारीज के सभी भाइयों ने न सिर्फ कहा बल्कि जीवन बनाकर दिखाया। और संस्था की सराहना करते हुए कहा कि सचमुच आप सभी ने मानवीय मूल्यों को समझकर आगे बढ़ाया है, सभी को सच्ची राह दिखाई है। उन्होंने कहा कि राजयोग मेडिटेशन से आत्म संयमी जीवन बनता है और उससे वे कभी भी निगेटिविटी को छाया में नहीं आते। वे सदा ही कंस्ट्रक्टिव एप्रोच के साथ जीते हैं वे ही समाज तथा विश्व के लिए आदर्श होते हैं। ग्रामीण प्रभाग



60,000 लोगों के सामूहिक राजयोग कार्यक्रम को विनर्स बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स के अध्यक्ष डॉ. ब्र.कु. दीपक ने ट्रॉफी प्रदान की। कार्यक्रम के संचालक जनरल सेक्रेटरी राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मूर्युंजय के कर कर्मलें द्वारा वर्ल्ड रेकॉर्ड्स का सर्टिफिकेट गुजरात जोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. वींजय दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. तस्म दीदी तथा राजयोगिनी ब्र.कु. अमर दीदी को प्रदान किया गया।

की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, महेशाणा ने सभी को दृढ़ संकल्प कराते हुए कहा कि तपस्वी ब्रह्माकुमारी के जीवन में नियम, मर्यादा का पालन करना ये अनेकों को प्रेरणा देता है। जिससे यकीन ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि परमपिता परमात्मा की शिक्षाओं पर चलकर उनकी आज्ञाओं को पूर्ण करेंगे। गुजरात क्षेत्र की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी ने सभी मेहमान एवं परमात्म प्रेमी भाइयों का स्वागत किया। राजकोट की सभी तपस्वी ब्रह्माकुमारी बहनों ने एक अद्भुत कृति से आने

सभी राजरक्षि, ब्रह्माचारी भाइयों ने अपने दिल पर हाथ रखते सभी के सामने ये दृढ़ प्रतिज्ञा की...

- हम तदैव ईश्वरीय नियमों के अनुरूप जियेंगे
- हर परिस्थिति में प्रवल, अडोल रहेंगे
- आपसी प्रेम, एकता से संगठन की गरिमा को बढ़ाएंगे

वाले भाइयों का सम्मान करते - तन्दुरुस्त भवः, शक्तिशाली भवः, निर्विक्रम भवः आदि दुआओं से फूलों की बारिश की। कार्यक्रम का आयोजन 'वैश्विक शान्ति और आंतरिक परिवर्तन' का संदेश फैलाने के उद्देश्य से किया गया। हेपपी विलेज के प्राणों में सचमुच एक सुकुन भरी शांति व आल्हाददायक वातावरण दिल को स्पर्श कर रहा था। इस अवसर पर ब्र.कु. शारदा, आम्बावाड़ी, अहमदाबाद, ब्र.कु. नेहा, मणि नगर, अहमदाबाद, जयेश भाई मोराठिया, डायरेक्टर शैलेश फेजिंग आदि की भी उपस्थिति रही।

60,000 लोगों के सामूहिक मेडिटेशन को 'विनर्स बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स' में किया शामिल

राजकोट : विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज से जुड़े लगभग 60,000 लोग अहमदाबाद स्थित गुजरात ब्रह्माकुमारीज विश्व विद्यालय के परिसर में एकत्रित हुए और सामूहिक राजयोग ध्यान किया, जिसे 'विनर्स बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स' में शामिल किया गया है। प्रकाश, रंग और आध्यात्मिक उत्सव से परिपूर्ण यह भव्य कार्यक्रम गुजरात में ब्रह्माकुमारीज की राज्य में सेवाओं की 60वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। गुजरात के प्रतिभागियों के साथ-साथ भारत के विभिन्न राज्यों और 15 से अधिक देशों के लोग भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। राजकोट के हेपपी विलेज रिटोट सेंटर में आयोजित सेवाकार्यों के सम्मान कार्यक्रम में विनर्स बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स के अध्यक्ष तथा 184 वर्ल्ड रेकॉर्ड करने वाले पहले भारतीय डॉ. ब्र.कु. दीपक ने इसको घोषणा की। संस्थान के एडिशनल जनरल सेक्रेटरी राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मूर्युंजय के कर कर्मलें से वर्ल्ड रेकॉर्ड का सर्टिफिकेट गुजरात जोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी तथा राजयोगिनी ब्र.कु. अमर दीदी को प्रदान किया।

